जीवन के वचन

(रेडियो प्रवचन)

लेखक : सनी डेविड

हिन्द एस. पी. सी. के

१९७९

लेखक के अन्य प्रकाशनः

उद्धार की योजना
क्रूस की कथा
खाली कब्र
१५ प्रभावशाली रेडियो प्रवचन
२० लघु रेडियो संदेश
मुक्ति के संदेश
हम किस के पास जाएं ?
यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे...
मसीही संदेश
सुसमाचार बोनेवाला
बाइबल की कलीसिया

भाग ग्यारह
प्रथम संस्करण १९७९

हिन्द एस. पी. सी. के. द्वारा मसीह की कलीसिया, पोस्ट बॉक्स ३८१५, नई दिल्ली-११००४९, के लिए प्रकाशित एवं प्रिंट्समैन १८ए/११ डोरीवालान, न्यू रोहतक रोड, नई दिल्ली-११०००५ में मुद्रित।

पुस्तक के विषय में

प्रस्तुत पुस्तक में जिन प्रवचनों को आप पढ़ने जा रहे हैं इन्हें विशेष रूप से रेडियो द्वारा प्रसारण के लिये भाई सनी डेविड ने लिखा है। श्री सनी डेविड इन प्रवचनों के न केवल लेखक ही हैं, परन्तु वे इनके वक्ता भी हैं। क्योंकि रेडियो से प्रसारित होने के लिये इनकी रिकॉर्डिंग करने में मैंने भाई सनी डेविड के साथ मिलकर काम किया है, इसलिये अब इन प्रवचनों को इस पुस्तक के रूप में देखकर मुझे बड़े ही आनन्द का अनुभव हो रहा है। रेडियो तथा पुस्तक के माध्यम से इन प्रवचनों को भारत में तथा आस-पास के कई देशों में भी इस प्रार्थना के साथ पहुंचाया अथवा भेजा जा रहा है, कि इनके द्वारा अनेकों लोगों को मसीह के सुसमाचार को सुनने वा समझने का अवसर प्राप्त होगा, और वे अपने जीवन के लिये परमेश्वर की इच्छा को जानेंगे, और इस से प्रेरणा पाकर वे प्रभु यीशु की आज्ञा का पालन करके एक मसीही और मसीह की कलीसिया के सदस्य बनेंगे।

इस पुस्तक में जिन पाठों को आप पढ़ेंगे वे नए नियम की कुछ मुख्य शिक्षाओं पर आधारित हैं। विशेष रूप से इनमें जिन बातों के ऊपर अधिक बल दिया गया है वे इस प्रकार है: आज हमारे लिये परमेश्वर की इच्छा क्या है और उसकी इच्छा का पालन करना हमारे लिये आवश्यक क्यों है; मनुष्य अपनी आत्मा को कैसे बचा सकता है, इत्यादि। सो मेरा विश्वास है कि जिन बातों को आप इस पुस्तक में पढ़ने जा रहे हैं, वे आपके जीवन में एक महत्वपूर्ण बदलाव तभी ला सकती हैं जब आप इन बातों को अपने जीवन में ग्रहण करके उन पर चलने का प्रयत्न करेंगे।

यदि इन बातों के सम्बन्ध में हम आपकी कोई सहायता कर सकते हैं, मसीही साहित्य इत्यादि के द्वारा, तो हम आपकी सेवा में हैं।

जे० सी० चोट
मसीह की कलीसिया
नई दिल्ली

विषय सूची

१.	बाइबल हमें क्या सिखाती है ?	५
२.	अब शिक्षक के आधीन नहीं	१०
३.	नए नियम के विषय में कुछ आवश्यक बातें	१५
४.	नए नियम की शिक्षाएं	२०
५.	क्या आप परमेश्वर को जानते हैं ?	२५
६.	अज्ञानता के कारण कोई न बचेगा	३०
७.	परमेश्वर की विशेषताएं	३४
८.	परमेश्वर प्रेम है	३९
९.	बड़ी और मुख्य आज्ञा	४४
१०.	क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है ?	४९
११.	तुम्हारा जीवन है ही क्या ?	५४
१२.	परिवर्तन	५९
१३.	नूह का उद्धार तथा हमारा उद्धार	६४
१४.	लूत की पत्नी को स्मरण रखो !	६९
१५.	अब, आओ, चींटियों के पास चलें	७४

१

बाइबल हमें क्या सिखाती है ?

पवित्रशास्त्र में एक जगह दाऊद कहता है, "तेरे वचन मुझको कैसे मीठे लगते हैं, वे मेरे मुंह में मधु से भी मीठे हैं ! तेरे उपदेशों के कारण मैं समझदार हो जाता हूं, इसलिये मैं सब मिथ्या मार्गों से बैर रखता हूं" (भजन संहिता ११९ : १०३, १०४)। क्या आप भी परमेश्वर से उसके वचन के बारे में यूं ही कह सकते हैं ? कितने मधुर उसके वचन आपके कानों में लगते हैं ? मेरा विश्वास है कि कुछ लोग परमेश्वर के वचन को कदाचित सुनना भी पसन्द नहीं करते, वे अपने रेडियो को बन्द कर देते हैं ज्योंही परमेश्वर या उसके वचन का नाम उनके कानों में पड़ता है। परन्तु दाऊद कहता है, तेरे वचन मुझको कैसे मीठे लगते हैं; तेरे उपदेशों के कारण मैं समझदार हो जाता हूं। क्या आप परमेश्वर के वचन से प्रेम रखते हैं ? क्या आप उसे सुनने की इच्छा अपने मन में रखते हैं ? आज मैं आपको परमेश्वर के वचन, अर्थात् बाइबल के बारे में ही कुछ आवश्यक बातें बताना चाहता हूं। आज मैं आपको बताना चाहता हूं कि बाइबल हमें मुख्य रूप से क्या सिखाती है।

एक परमेश्वर है

बाइबल हमें सिखाती है कि परमेश्वर एक है और वह परमेश्वर सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञानी है, वह सारी सृष्टि और मनुष्य का रचने वाला है। बाइबल बताती है कि "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की" (उत्पत्ति १:१)। परमेश्वर ने उजियाले को

अन्धेरे से अलग करके रात और दिन को बनाया, और उसने रात वा दिन पर प्रभुता करने के लिये चांद, सितारों और सूरज को भी सृजा। सब किस्म के वृक्ष इत्यादि और पशु-पक्षी आदि, अर्थात् जो कुछ भी आकाश और पृथ्वी पर है, बाइबल बताती है, उन सब वस्तुओं का रचनेवाला परमेश्वर है। पवित्र बाइबल का एक लेखक कहता है, "मैं तेरा धन्यवाद करूंगा, इसलिये कि मैं भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया हूं" (भजन० १३९:१४)। क्या आप जानते हैं कि आरम्भ में परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि कैसे की? बाइबल बताती है कि परमेश्वर ने मनुष्य को भूमि की मिट्टी से रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया, और आदम जीवता प्राणी बन गया (उत्पत्ति २:७)। बाइबल में एक जगह लिखा है, "आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकाशमन्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है" (भजन० १९:१), अर्थात् सम्पूर्ण सृष्टि परमेश्वर के अस्तित्व का प्रमाण है।

मनुष्य परमेश्वर से अलग है

फिर बाइबल मनुष्य और परमेश्वर के बारे में यूं बतलाती है, कि मनुष्य अपने पाप और अधर्म के कामों के कारण परमेश्वर से अलग और दूर है (यशायाह ५९:२)। जब परमेश्वर ने आरम्भ में मनुष्य को बनाया था तो उसने मनुष्य को अपनी महिमा और बड़ाई के लिये रचा था। परन्तु बाइबल बताती है, मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा पर न चलकर पाप किया, और इस कारण मनुष्य उस की महिमा से दूर और अलग हो गया। पवित्र बाइबल कहती है कि सब मनुष्यों ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है, और इसलिये प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर से अलग होकर अनन्त मृत्यु दण्ड का भागी है (रोमियों ३:२३; ६:२३)।

परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करता है

किन्तु, फिर बाइबल हमें आगे बताती है, कि यद्यपि परमेश्वर पाप से घृणा करता है, परन्तु तौ भी वह मनुष्य से प्रेम करता है, और उसे

अपनी सगति में वापस बुलाना चाहता है। पवित्रशास्त्र में परमेश्वर एक जगह यूं कहता है, "जो प्राणी पाप करे वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा और न पिता पुत्र का; धर्मी को अपने ही धर्म का फल, और दुष्ट को अपनी ही दुष्टता का फल मिलेगा। परन्तु यदि दुष्ट जन अपने सब पापों से फिरकर, मेरी सब विधियों का पालन करे, तो वह न मरेगा, वरन जीवित रहेगा। उसने जितने अपराध किए हों, उनमें से किसी का स्मरण उसके विरुद्ध न किया जाएगा; जो धर्म का काम उसने किया हो, उसके कारण वह जीवित रहेगा। प्रभु यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं दुष्ट के मरने से कुछ भी प्रसन्न होता हूं ? क्या मैं इस से प्रसन्न नहीं होता कि वह अपने मार्ग से फिरकर जीवित रहे ?" (यहेज़केल १८:२०-२३)। सो हम देखते हैं, परमेश्वर मनुष्य को पाप के दन्ड से बचाना चाहता है; वह उसके सारे पापों को क्षमा करके उसका उद्धार करना चाहता है; और उसे अपनी संगति में वापस बुलाना चाहता है।

पवित्र बाइबल कहती है, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए" (यूहन्ना ३:१६)। क्या आप जानते हैं कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र यीशु मसीह को क्यों दे दिया ? क्यों परमेश्वर ने मनुष्य से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपने एकलौते पुत्र को स्वर्ग से पृथ्वी पर भेज दिया ? बाइबल इस का करण हमें यह कहकर बताती है, "परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया", और यीशु मसीह के विषय में बाइबल कहती है, "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं" (२ कुरिन्थियों ५:१९,२१)। सो परमेश्वर ने हमारे अपराधों के कारण स्वयं हमें दन्डित न करके, हमारे सारे अपराधों का दोष अपने एकलौते पुत्र यीशु पर लगाया, और हमारे पापों और अधर्म के कामों के हेतु उसने उसे दन्डित किया। बाइबल बताती है, आज से लगभग दो हज़ार वर्ष

पूर्व परमेश्वर की मनसा और उसके होनहार के ज्ञान के अनुसार यीशु को क्रूस के ऊपर लटकाकर मृत्यु दन्ड दिया गया। और इस प्रकार वह पृथ्वी पर सारे मनुष्यों के लिये एक सिद्ध बलिदान और पापों का प्रयश्चित ठहरा (१ यूहन्ना २:२)।

और फिर, पवित्र बाइबल हमें यूं बताती है कि जगत के पापों के कारण अपने एकलौते पुत्र को बलिदान करने के बाद परमेश्वर ने अपनी सामर्थ से उसे तीसरे दिन मुर्दों में से जिला दिया, और वह स्वर्ग में वापस जाने से पहिले चालीस दिन तक इस पृथ्वी पर रहा, और बहुतेरे लोगों ने उसे देखा और उस से बातें कीं। बाइबल बताती है, स्वर्ग में उठाए जाने से कुछ ही समय पहिले यीशु ने अपने चेलों को यह अन्तिम और मुख्य आदेश दिया। उसने कहा, "कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें. जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं, मानना सिखाओ; और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं" (मत्ती २८ : १८-२०)। "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६ : १५, १६)। और यह बातें कहने के बाद, बाइबल बताती है, यीशु ऊपर उठा लिया गया, और एक दिन वह फिर प्रगट होगा, और अपने वचन के अनुसार सब मनुष्यों का न्याय करेगा (प्रेरितों १ : १-११; यूहन्ना १२ : ४८)।

मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य

मनुष्यों को सम्बोधित करके बाइबल कहती है, मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य परमेश्वर का भय मानना और उसकी आज्ञाओं का पालन करना है। लिखा है, "कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है। क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय

करेगा" (सभोपदेशक १२ : १३, १४)।

मित्रो, मेरी आशा और मेरा विश्वास है कि आप इन सभी बातों के ऊपर बड़ी ही गम्भीरता के साथ विचार करेंगे, और प्रभु के उस महान् दिन के आने से पहिले, उनके न्यायासन के सामने खड़े होने के लिये अपने आपको पूरी तरह से तैयार करेंगे। परमेश्वर आपसे प्रेम करता है, उसने आपको बचाने के लिये अपने एकलौते पुत्र को बलिदान कर दिया। वह चाहता है कि आप उसके पुत्र यीशु में विश्वास लाकर और उसकी आज्ञा पालन करके उसके द्वारा अपना मेल परमेश्वर के साथ कर लें। जबकि आप इस महत्त्वपूर्ण निश्चय को करते हैं, परमेश्वर आपकी सहायता करे!

२

अब शिक्षक के आधीन नहीं

एक बार फिर से आपके साथ बाइबल अध्ययन करने के इस अवसर को प्राप्त करके मुझे बड़ी प्रसन्नता है। मेरा विश्वास है कि आप भी पूरी गम्भीरता के साथ परमेश्वर के वचन के बारे में सुनने के लिये तैयार हैं। इसमें कोई संदेह नहीं, परमेश्वर ने हमें अपना वचन पढ़ने, समझने और उस पर चलने के लिये सौंपा है। और बाइबल में हर एक पवित्र वचन परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है, और हमारे लिये उपदेश समझाने और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है, ताकि उस को पढ़कर और उस पर चलकर परमेश्वर का जन सिद्ध बने (२ तीमुथियुस ३:१६, १७)।

जब हम परमेश्वर के वचन को ठीक तरह से नहीं समझते और उसे उचित रीति से काम में नहीं लाते, तो परमेश्वर का वचन ही न्याय के दिन हमारे लिये हानिकारक सिद्ध हो सकता है। प्रभु यीशु ने कहा, "जो वचन मैंने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा" (यूहन्ना १२ : ४८)। जब हम कभी बीमार पड़ जाते हैं तो हम आवश्यकता अनुसार उचित दवाई लेते हैं, परन्तु यदि हम किसी भी दवाई को बिना समझे या बिना जाँचे यूं ही ले लें, तो वही दवाई हमारे लिये हानिकारक सिद्ध होगी। अब इसका मतलब यह नहीं है कि वह दवाई दवाई नहीं हैं, किन्तु इसलिए कि उस दवाई को ठीक से समझकर नहीं लिया गया, या

जिस बीमारी के लिये वह नहीं है उसके लिये उसका इस्तेमाल किया गया, इसी कारण से वह दवाई लाभ पहुंचाने के विपरीत हानिकारक सिद्ध हुई।

इसी प्रकार जो लोग परमेश्वर के वचन को ठीक रीति से काम में नहीं लाते, वे उसका उपयोग स्वयं अपने ही नाश के लिये करते है। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि आप इस विषय पर पूरी गम्भीरता के साथ विचार करें, क्योंकि इस विषय का सम्बन्ध आपकी आत्मा के बचाए जाने और नाश होने से है।

बाइबल अध्ययन के बारे में एक बड़ी ही मुख्य बात यह है कि हम इन तीन बातों को सदा ध्यान में रखें, अर्थात् जिस बात को हम पढ़ या सुन रहे हैं, उसका बोलनेवाला कौन हैं। दूसरे, वह बात किस से कही जा रही है, और तीसरे, यह कि किस समय में उस बात का आदेश दिया गया। जैसे कि हम देखते हैं कि आरम्भ में परमेश्वर ने आदम वा हव्वा को यह आज्ञा दी थी कि तुम अदन की वाटिका में लगे एक विशेष फल को मत खाना। परन्तु फिर, हम देखते हैं कि लिखा है, शैतान ने हव्वा के पास आकर उससे कहा कि तुम उस फल को खाना। सो हम यहां देखते हैं कि एक ओर तो परमेश्वर बोल रहा है और दूसरी ओर शैतान बोल रहा है। दूसरे हम यह देखें कि अमुक बात किस से कही जा रही है, अर्थात् जैसा कि हम पढ़ते हैं कि जब नामान कोढ़ी अपने कोढ़ से चंगा होने के लिये परमेश्वर के भक्त के पास आया, तो परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी कि तू जाकर सात बार यरदन नदी में डुबकी मार तो तेरा कोढ़ चंगा हो जाएगा। यह आज्ञा केवल नामान कोढ़ी के लिये थी, अर्थात्, यदि कोई अन्य व्यक्ति कोढ़ से चंगा होने के लिये यरदन में जाकर डुबकी मारता तो वह कदापि चंगा न होता, क्योंकि यह आज्ञा परमेश्वर ने केवल नामान को ही दी थी। इसी प्रकार जल-प्रलय से पूर्व, जब परमेश्वर ने नूह को यह आज्ञा दी थी कि तू एक जहाज़ बना जिसके द्वारा मैं तुझे और तेरे परिवार को बचाऊंगा, परमेश्वर की यह आज्ञा केवल नूह के लिये ही थी। फिर हमें देखना चाहिए, कि अमुक आज्ञा या आदेश लोगों को किस काल या समय में दिया गया।

बाइबल हमें तीन निश्चित समयों या कालों के बारे में बताती है।

एक समय वह था जबकि लोगों के पास परमेश्वर का वचन लिखित रूप में उपलब्ध नहीं था। यह वह समय था जिसमें आदम, नूह और इब्राहीम हुए। इसके कई वर्षों के पश्चात् परमेश्वर ने मूसा नाम के एक व्यक्ति को चुना और उसके द्वारा परमेश्वर ने पहली बार लोगों को अपनी लिखी हुई व्यवस्था दी। यह व्यवस्था हमारी बाइबल का पहिला भाग है, और इसे हम आज पुराना नियम कहते हैं। जब परमेश्वर ने लोगों को अपनी व्यवस्था, अर्थात् पुराना नियम लिखवाकर दे दिया, तो उनका यह कर्त्तव्य बन गया कि वे उस लिखी हुई वाचा का पालन करें। किन्तु आज उस वाचा को हम पुराना नियम क्यों कहते हैं? इसलिये कि परमेश्वर ने प्रभु यीशु मसीह के जगत में आने के बाद उसके द्वारा लोगों को अपनी एक नई वाचा दी, जिसे हम नया नियम कहते हैं, और यह बाइबल का दूसरा भाग है।

अब शायद आप यह जानना चाहें कि परमेश्वर ने एक वाचा देने के बाद दूसरी वाचा क्यों दी? इस विषय में परमेश्वर ने हमें बाइबल में स्पष्ट रूप से यह बताया है कि जिस अभिप्राय से पुराना नियम दिया गया था उसका उद्देश्य क्योंकि पूरा हो चुका है, इसलिये परमेश्वर ने उसे हटा कर उसके स्थान पर आज हमें अपनी नई वाचा को दिया है: इस विषय में पवित्र बाइबल का लेखक हमें यूं बताता है, "निदान, वह पहिले को उठा देता है, ताकि दूसरे को नियुक्त करे।" (इब्रानियों १० : ९)। फिर वह कहता है, "नई बाचा के स्थापन से उसने प्रथम वाचा को पुरानी ठहराया, और जो वस्तु पुरानी और जीर्ण हो जाती है उसका मिट जाना अनिवार्य है" (इब्रानियों ८ : १३)। सो प्रथम वाचा को पुरानी ठहराकर उसे समाप्त क्यों किया गया? लेखक हमें आगे यूं बताता है, "क्योंकि यदि वह पहिली वाचा निर्दोष होती तो दूसरी के लिये अवसर न ढूंढ़ा जाता" (इब्रानियों ८ : ७)। सो हम देखते हैं कि पहिली वाचा सिद्ध नहीं थी, अर्थात् उसमें पाप और उसके परिणाम को तो दर्शाया गया था, परन्तु उसमें मनुष्य के उद्धारकर्त्ता को नहीं दिया गया था। इसलिये परमेश्वर ने हमें अपनी नई वा सिद्ध वाचा दी, जिस में उसने हमें एक उद्धारकर्त्ता भी दिया, अर्थात् यीशु मसीह।

इस विषय में पवित्र शास्त्र का लेखक हमें आगे यूं बताता है, "क्योंकि व्यवस्था जिसमें आने वाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है, पर उनका असली स्वरूप नहीं" (इब्रानियों १० : १), अर्थात् व्यवस्था में उन सिद्ध वस्तुओं का केवल प्रतिबिम्ब था जो भविष्य में आने वाली थीं, परन्तु उनका असली स्वरूप नहीं था। उदाहरण स्वरूप, पुराने नियम के भीतर पशुओं का बलिदान चढ़ाया जाता था, और वे सबके सब बलिदान भविष्य में होने वाले उस सिद्ध बलिदान का एक प्रतिबिम्ब थे जिसे प्रभु यीशु ने आकर क्रूस के ऊपर दिया, अर्थात् उसने स्वयं को जगत के लोगों के पापों के कारण बलिदान कर दिया।

प्रेरित पौलुस एक स्थान पर कहता है, "तब फिर व्यवस्था क्या रही ? वह तो अपराधों के कारण बाद में दी गई, कि उस वंश के आने तक रहे, जिस को प्रतिज्ञा दी गई थी.....और वह मसीह है" (गलतियों ३ : १९, १६)। प्रभु यीशु मसीह के आने के बाद व्यवस्था का कोई प्रयोजन न रहा। बाइबल का लेखक आगे कहता है, "कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, पर केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है.....इसलिये कि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी न ठहरेगा.....क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती, तो मसीह का मरना व्यर्थ होता" (गलतियों २ : १६, २१)।

आज हम पुराने नियम को मानकर नहीं परन्तु प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरते हैं। पवित्र वचन का लेखक हमें आगे बताता है, जब वह कहता है, "पर विश्वास के आने से पहिले व्यवस्था की आधीनता में हमारी रखवाली होती थी, और उस विश्वास के आने तक जो प्रगट होने वाला था. हम उसी के बन्धन में रहे। इसलिये व्यवस्था मसीह तक पहुंचाने को हमारी शिक्षक ठहरी, कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें। परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो हम अब शिक्षक के आधीन न रहे। क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह का पहिन लिया है" (गलतियों ३ : २३-२७)। सो हम क्या देखते हैं ? यह कि अब

हम यीशु मसीह में विश्वास करके और उसमें बपतिस्मा लेकर धर्मी ठहरते हैं। इसलिये व्यवस्था, अर्थात् पुराने नियम को, मानकर कोई भी धर्मी न ठहरेगा। व्यवस्था को परमेश्वर ने लोगों को एक शिक्षक के रूप में दिया था, जिसका काम लोगों को मसीह तक लाना था। परन्तु अब मसीह आ चुका और हम उस तक पहुंच गए, तो अब हमें व्यवस्था का प्रयोजन न रहा।

आज जब हम बाइबल में से पढ़कर अपने लिये परमेश्वर की इच्छा को मालूम करना चाहते हैं, तो हमें यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिए, आज हम पुराने नियम, अर्थात् शिक्षक के आधीन, नहीं हैं, परन्तु हम प्रभु यीशु मसीह के नए नियम है आधीन हैं। यही कारण है कि आज पवित्र शास्त्र हमें यूं आदेश देकर कहता है, "और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो" (कुलुस्सियों ३ : १७)।

परमेश्वर आपको अपने वचन के ज्ञान में बढ़ने वा चलने की सामर्थ दे।

३

नए नियम के विषय में कुछ आवश्यक बातें

यूं तो मैं अकसर बाइबल में से अनेकों पाठों को लेकर आपके सम्मुख रखता हूं, परन्तु आज मैं आप को स्वयं बाइबल के ही बारे में कुछ विशेष बातें बताने जा रहा हूं, विशेष रूप से "नए नियम" के बारे में। हम में से कुछ लोग, जिनके घरों में बाइबल है, या जिन लोगों ने बाइबल को देखा वा पढ़ा है, जानते हैं कि उस में कुल मिलाकर छियासठ पुस्तकें हैं। इन छियासठ पुस्तकों को दो मुख्य भागों में बांटा गया है—जिन्हें हम "पुराना नियम" और "नया नियम" के नाम से जानते हैं। पुराने नियम की उन्तालिस पुस्तकों को परमेश्वर ने एक वाचा के रूप में उन लोगों को दिया था जो आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व, अर्थात् प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु के समय तक इस पृथ्वी पर थे। परन्तु नए नियम की सताईस पुस्तकों को परमेश्वर ने अपनी नई वाचा के रूप में आज हमें, अर्थात् वे लोग जो यीशु मसीह के बलिदान के बाद हुए, दिया है। यह जानने के लिये कि आज हमारे लिये परमेश्वर के नियम वा आदेश क्या हैं, हमें नए नियम में से पढ़ना चाहिए, अर्थात् नया नियम आज हमारे लिये परमेश्वर की इच्छा का सम्पूर्ण प्रकाशन है। आज मैं आपको नए नियम की इन्हीं सताईस पुस्तकों के बारे में संक्षिप्त में कुछ विशेष जानकारी दूंगा।

नए नियम में सबसे पहिले जिन चार पुस्तकों को हम देखते हैं वे इस प्रकार हैं: मत्ती रचित सुसमाचार, मरकुस रचित सुसमाचार, लूका

रचित सुसमाचार, और यूहन्ना रचित सुसमाचार, अर्थात्, मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना, ये चारों प्रभु यीशु के अनुयायी थे, और इन चारों ने प्रभु यीशु के इस सुसमाचार को, कि वह जगत के पापों के कारण क्रूस के ऊपर बलिदान हुआ, अपनी-अपनी पुस्तकों में लिखा है। ये चारों लेखक हमें प्रभु यीशु मसीह के जीवन, उसके उपदेश वा शिक्षाओं और उसके अनेकों आश्चर्य-पूर्ण कामों के बारे में विस्तार से बताते हैं। यदि आप प्रभु यीशु मसीह के जीवन, उसके उपदेश, और उसके सामर्थ पूर्ण कामों इत्यादि के बारे में जानना चाहते हैं, तो आपको चाहिए कि आप नए नियम की पहिली चार पुस्तकों को पढ़ें।

इन चार पुस्तकों के बाद, पांचवी पुस्तक जो हमें नए नियम में मिलती है, उसे हम इतिहास की पुस्तक कहते हैं। इस पुस्तक में प्रभु यीशु के प्रेरितों के कामों का वर्णन है, इसलिये इस पुस्तक का नाम प्रेरितों के काम की पुस्तक है। प्रेरितों के काम की पुस्तक को इतिहास की पुस्तक इसलिये माना जाता है, क्योंकि इस पुस्तक में नए नियम की कलीसिया का सम्पूर्ण इतिहास हमें मिलता है, जिसे प्रभु यीशु ने लगभग ३३ ई० स० में स्वयं बनाया था। यह पुस्तक हमें बताती है, किस प्रकार आरम्भ में यीशु मसीह की कलीसिया अर्थात् उसकी मन्डली की स्थापना हुई, किस तरह से लोग मसीही बने, और फिर कैसे मसीह यीशु की कलीसियाएं संसार भर में स्थापित हुईं। यदि आप प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया के बारे में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, या आप इस प्रश्न का उत्तर जानना चाहते हैं, "उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूं ?" तो आप प्रेरितों के काम की पुस्तक को ध्यान से पढ़ें।

अब, नए नियम में इन पांच पुस्तकों के बाद हमें इक्कीस ऐसी पुस्तकें मिलती हैं, जो कि वास्तव में पत्रियां हैं। ये इक्कीस पत्रियां मसीह की कलीसियाओं के नाम भिन्न-भिन्न स्थानों पर या तीमुथियुस वा तीतुस जैसे विश्वासी मसीही लोगों के नाम लिखी गईं। इन पत्रियों को प्रेरित पौलुस, प्रेरित पतरस, वा प्रेरित यूहन्ना, इत्यादि लोगों ने परमेश्वर से प्रेरणा पाकर मसीही लोगों को लिखा। इन पत्रियों में अनेकों बातों की

चर्चा हमें मिलती है। जैसे कि रोम में कलीसिया के नाम लिखी गई प्रेरित पौलुस की पत्री में जिस विशेष बात की चर्चा हमें मिलती है वह यह है, प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार हमारे उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है। इसी प्रकार, गलतियों नाम के स्थान पर कलीसिया को पत्री लिखकर, प्रेरित पौलुस उन लोगों का वर्णन करता है जो वहां कलीसिया में आकर लोगों को बहकाने का प्रयत्न यूं कहकर कर रहे थे कि तुम्हें पुराने नियम की व्यवस्था का अनुसरण करना अवश्य है। प्रेरित इस पत्री में एक जगह लिखकर यूं कहता है, "मुझे आश्चर्य होता है, कि जिस ने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उस से तुम इतनी जल्दी फिरकर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे। परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं: पर बात यह है कि कितने ऐसे हैं, जो तुम्हें घबरा देते और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं" (गलतियों १:६,७)। और प्रेरित उन्हें आगे लिखकर कहता है कि तुम में से जो लोग पुराने नियम की व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हैं वे मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हैं (गलतियों ५:४)।

नए नियम की अन्य पत्रियों में मसीही लोगों को अनेकों उपदेश वा आदेश दिये गए हैं, अर्थात् उन लोगों से सावधान रहें जो झूठी शिक्षा देते हैं, जो पुनः रुत्थान का इन्कार करते हैं और प्रभु यीशु के दोबारा आने की शिक्षा का उपहास उड़ाते हैं। ये पत्रियां बताती हैं कि मसीही लोगों को किस प्रकार का भक्ति-पूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहिए और अन्य लोगों के सामने एक अच्छा आदर्श बनना चाहिए।

नए नियम की अन्तिम पुस्तक का नाम है, प्रकाशितवाक्य। इस पुस्तक में दर्शाया गया है कि मसीही जीवन इस पृथ्वी पर चाहे कितना भी दुख-पूर्ण वा कष्टों से भरपूर क्यों न हो, परन्तु जो अन्त तक प्रभु के प्रति विश्वासी बना रहेगा वह अनन्त जीवन का वारिस और स्वर्गीय आनन्द का भागी होगा। इस पुस्तक में लिखा है, परमेश्वर अपने लोगों का न्याय अवश्य ही चुकाएगा, और वह उनके साथ रहेगा, "और वह उन की आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी...जो जय पाए

वही इन वस्तुओं का वारिस होगा, और मैं उसका परमेश्वर होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा। पर डरपोकों, और अविश्वासियों, और घिनौने और हत्यारों, और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और मूर्ती पूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा जो आग और गन्धक से जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है" (प्रकाशित० २१:३,४,७,८)। प्रकाशित-वाक्य की पुस्तक में मसीही जीवन को एक विजयी जीवन के रूप में दिखाया गया है। यदि आप मसीही जीवन की आशा के बारे में जनना चाहते हैं, यदि आप इस प्रश्न का उत्तर जानना चाहते हैं, यदि मैं एक मसीही बन जाऊं तो मुझे क्या मिलेगा ? तो आपको चाहिए कि आप प्रकाशित वाक्य की पुस्तक को पढ़ें।

मित्रो, मसीही जीवन वास्तव में एक आशापूर्ण और आनन्दमय जीवन है। मसीही जीवन की आशा और आनन्द यह है, यदि मैं मसीह यीशु में हूं, तो मुझ पर दन्ड की आज्ञा नहीं, क्योंकि पवित्र बाइबल कहती है, "सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दन्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं बरन आत्मा के अनुसार चलते हैं" (रोमियों ८:१)। एक मसीही होने के कारण मैं यह जानता हूं, प्रभु यीशु मसीह के क्रूस के ऊपर बलिदान के कारण परमेश्वर ने मेरे सब पापों को क्षमा किया है, क्योकि मैंने प्रभु की आज्ञानुसार उसमें पूर्ण विश्वास किया है, और अपने सब पापों से पश्चाताप करके अपने पुराने मनुष्य को बपतिस्मे के द्वारा जल रूपी कब्र के भीतर सदा के लिये दफ़ना दिया है। अब मैं एक नया इन्सान हूं, एक नई सृष्टि हूं (२ कु० ५:१७)। मेरी आशा वा मेरा आनन्द सांसारिक नहीं, परन्तु आत्मिक है अर्थात् हमारा प्रभु एक दिन अपने लोगों को लेने के लिये वापस आएगा, उसके लोग सदा उसके साथ रहेंगे, वह उनका परमेश्वर होगा और वे उसके लोग होंगे।

क्या आपके पास भी यही आशा है ? यदि नहीं, तो आप भी प्रभु यीशु पर विश्वास लाकर और उसकी आज्ञाओं को मानकर एक नए इन्सान बन सकते हैं, आप भी मसीही जीवन की आशा और आनन्द में शामिल हो सकते हैं। यदि आप पवित्र बाइबल के बारे में और अधिक

जानने की इच्छा रखते हैं, तो हमारे यहां से बाइबल सम्बन्धी पुस्तकों को मंगवाकर पढ़िए। हम चाहते हैं आप सच्चाई को जानें। हम प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर अपने सत्य मार्ग पर चलने के लिये आपको सामर्थ दे और आपकी अगुवाई करे।

४

नए नियम की शिक्षाएं

अपने पिछले पाठ में हमने बाइबल के दूसरे भाग, अर्थात् नए नियम, के बारे में कुछ आवश्यक बातों को देखा था और आज हम नए नियम की कुछ विशेष शिक्षाओं के ऊपर विचार करेंगे। मेरी आशा है कि आप इन सब बातों को बड़ा ही ध्यान लगाकर सुनेंगे।

नया नियम पवित्र बाइबल का दूसरा मुख्य भाग है। पुराने नियम में जिन बातों को परमेश्वर ने लिखवाया था, जब वे सारी बातें पूरी हो गईं, तो परमेश्वर ने हमें नया नियम दिया। नया नियम, अर्थात् नई वाचा, आज हमारे लिये परमेश्वर की इच्छा का प्रकाशन है। अर्थात् नए नियम के द्वारा परमेश्वर आज हम से बातें करता है।

नए नियम में सबसे पहिले जिस मुख्य बात को हम देखते हैं, वह है प्रभु यीशु मसीह का जन्म। वास्तव में जिस विशेष उद्देश्य को सामने रखकर परमेश्वर ने पुराने नियम की रचना करवाई थी, वह मुख्य रूप से इसी बात को प्रकट करने का था कि भविष्य में वह जगत के उद्धारकर्त्ता को पृथ्वी पर भेजेगा और जब यीशु का जन्म होने वाला था, तो परमेश्वर ने एक स्वर्गदूत के द्वारा प्रगट करके यूं बताया, जब उस बालक का जन्म होगा तो उसका नाम यीशु रखा जाए, क्योंकि वह लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा (मत्ती १:२१)। "यीशु" नाम का अर्थ है, "प्रभु उद्धार है।" नया नियम बताता है, यीशु का जन्म इसलिये हुआ ताकि वह लोगों का उनके पापों से उद्धार करे।

फिर नए नियम में जिस दूसरी विशेष बात के ऊपर हमारा ध्यान जाता है वह है यीशु मसीह की अद्भुत शिक्षाएं और उसके आश्चर्य-पूर्ण काम। यीशु की बाल अवस्था के बारे में हम यूं पढ़ते हैं, "और बालक बढ़ता, और बलवन्त होता, और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया; और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था" (लूका २:४०)। फिर कुछ और आगे चलकर यूं लिखा है, "और यीशु बुद्धि और डील-डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया" (लूका २:५२)। जब उसकी आयु लगभग तीस वर्ष की थी तो उसने यूहन्ना नाम के एक व्यक्ति के हाथ से बपतिस्मा लिया। फिर यहां से हम देखते हैं कि यीशु ने उपदेश देना और लोगों की हर प्रकार की दुर्बलताओं और बीमारियों को चंगा करना आरम्भ कर दिया। यहां तक कि नया नियम हमें बताता है कि यीशु का यश यरूशलेम और उसके आस पास के स्थानों में फैल गया। यीशु ने लोगों को पाप से मन फिराकर परमेश्वर के पास आने का उपदेश दिया। यीशु ने सिखाया कि पहिले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो अन्य आवश्यक वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी (मत्ती ६:३३)। यीशु ने उपदेश देकर कहा, "जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें तुम भी उनके साथ वैसा ही करो" (मत्ती ७:१२)। प्रभु यीशु ने सिखाया, "तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना" और "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना" (मरकुस १२:३०,३१)।

प्रभु यीशु ने अनेकों आश्चर्य जनक कार्य भी किए, जिनका वर्णन हमें नए नियम में मिलता है। उसने कोढ़ियों, गूंगों, बहिरों, अन्धों और अपाहिजों को तत्काल चंगा कर दिया। लाज़र नाम के एक व्यक्ति को यीशु ने चार दिन के बाद मुर्दों में से जिलाकर खड़ा कर दिया—लिखा है कि लाज़र को मरे और कब्र में रखे चार दिन हो चुके थे, परन्तु जब यीशु ने प्रार्थना करके लाज़र को पुकारा, तो लाज़र कफ़न से हाथ पैर बन्धे हुए कब से बाहर निकल कर आ गया। फिर एक बार समुद्र में बड़ा भयानक तूफ़ान उठा और यीशु अपने चेलों के साथ नाव में बैठकर यात्रा

कर रहा था। यीशु के चेले घबरा उठे, और अत्यन्त डर गए। इस पर यीशु ने पानी और हवा को डांटा, और लिखा है कि सब कुछ एकदम शांत हो गया। एक अन्य स्थान पर लिखा है, नए नियम में, "यीशु ने और भी बहुत चिह्न चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है; और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ" (यूहन्ना २०:३०,३१)।

और नया नियम हमें आगे बताता है कि फिर किस प्रकार परमेश्वर की मनसा वा उसकी इच्छा के अनुसार यीशु पकड़वाया गया और उस पर झूठे आरोप लगाकर उसे दोषी ठहराने का प्रयत्न किया गया; और तत्पश्चात उसे एक क्रूस के ऊपर लटकाकर मृत्यु दन्ड दिया गया। यीशु के बारे में नए नियम में लिखा है, "न तो उसने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आपको सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था। वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं" (१ पतरस २:२२-२४)। नया नियम हमें बताता है कि यीशु हमारे पापों के बदले में, हमारा प्रायश्चित होने के कारण, क्रूस के ऊपर मारा गया, अर्थात् परमेश्वर ने हम से ऐसा प्रेम किया कि उसने हमें पाप के दन्ड से बचाने के लिये एक मार्ग तैयार किया, उसने हमारे पापों का दन्ड क्रूस के ऊपर अपने पुत्र यीशु को दिलवाया, ताकि हम नाश होने से बच जाएं।

नया नियम हम पर यह भी प्रगट करता है कि परमेश्वर ने तीसरे दिन यीशु को फिर मुर्दों में से जिला दिया, और स्वर्ग पर वापस उठा लिये जाने से पहिले यीशु चालिस दिन तक इस पृथ्वी पर रहा इन चालिस दिनों में वह अनेकों लोगों को दिखाई दिया, और अपने चेलों को यह अन्तिम आज्ञा देकर कि तुम संसार भर में इस खुश-खबरी का प्रचार करो और जो लोग सुनकर विश्वास लाएं और अपना मन फिराएं, उन्हें उनके पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा दो, यीशु अपने

पिता के पास स्वर्ग में वापस चला गया (मत्ती २८; मरकुस १६; लूका २४)।

नया नियम हमें यह भी बताता है कि यीशु ने अपनी कलीसिया की स्थापना यरूशलेम में की। कलीसिया मसीह यीशु की वह मंडली है जिसके सदस्य बनने के लिये लोगों ने यीशु की आज्ञाओं का पालन किया है। नया नियम कहता है कि कलीसिया "मसीह की देह" है, जिसका सिर मसीह है (कुलुस्सियों १:१८)। यीशु मसीह की कलीसिया के सारे सदस्य उसे सम्मान और महिमा देने के लिये "मसीही" कहलाते हैं (प्रेरितों ११:२६), और उनकी प्रत्येक मन्डली मसीह की कलीसिया कहलाती है (रोमियों १६:१६)। मसीह की कलीसियाओं के सारे सदस्य केवल नए नियम को ही अपना आदर्श मानते हैं और प्रत्येक बात में केवल नए नियम का ही अनुसरण करते हैं (प्रकाशित वाक्य २२:१८,१९)।

नया नियम हमें शिक्षा देता है कि एक दिन परमेश्वर यीशु मसीह के द्वारा सारे मनुष्यों का न्याय करेगा। लिखा है, "इसलिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है" (प्रेरितों १७:३०,३१)।

न्याय के दिन, नया नियम कहता है, "जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे, और जिन्होंने बुराई की है वे दन्ड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे" (यूहन्ना ५:२९)। फिर लिखा है, "क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले-बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए" (२ कुरिन्थियों ५:१०)।

नए नियम की शिक्षानुसार, न्याय के दिन यीशु स्वर्ग से प्रगट होगा। उस दिन सारे अधर्मी नरक में अनन्त दन्ड पाने के लिये डाले जाएंगे, और धर्मी स्वर्ग में अनन्त जीवन के वारिस होंगे (२ थिस्सलुनीकियों १:७-१०)।

परमेश्वर ने अपनी पुस्तक में इस बात को भी प्रगट किया है कि न्याय के दिन प्रत्येक मनुष्य का न्याय प्रभु यीशु मसीह के नए नियम के अनुसार ही होगा। यीशु ने एक जगह कहा, "यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता, क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के लिये नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिये आया हूं। जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उस को दोषी ठहरानेवाला तो एक है : अर्थात् जो वचन मैंने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा" (यूहन्ना १२:४७,४८)।

सो नया नियम हमें ये सारी बातें बताता है, इसलिये हमें परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए, क्योंकि उसने अपनी पुस्तक में हमें सम्पूर्ण जानकारी दी है। हमें चाहिए कि हम निरन्तर उसके वचन का अध्ययन करते रहें, और अपने जीवनों को उसके वचन के अनुसार बनाने का प्रयत्न करें। यदि आप परमेश्वर के वचन के बारे में और अधिक जानना चाहते हैं, तो हमारे यहां से बाइबल सम्बन्धि पाठों को मंगाकर पढ़िए।

प्रभु की आशीष उन सब पर बनी रहे जो उसके वचन को सुनते और उसे मानते हैं।

५

क्या आप परमेश्वर को जानते हैं ?

हम सभी का यह विश्वास है कि एक परमेश्वर है। यद्यपि कुछ लोग ऐसे भी हैं जो परमेश्वर के अस्तित्व का इन्कार करते हैं, किन्तु यह दर्शाता है कि वे सच्चाई को स्वीकार नहीं करना चाहते। दूसरी ओर अन्य कुछ ऐसे भी लोग हैं जो परमेश्वर के बारे में अपने मन में ज्ञान तो अश्वय रखते हैं, किन्तु वे उसे वास्तव में पहिचानते या जानते नहीं। एक जगह प्रेरित पौलुस पवित्र बाइबल में कहता है, "परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं। इसलिये कि परमेश्वर के बिषय का ज्ञान उनके मनों में प्रगट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है। क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं। इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि उनका निबुद्धि मन अन्धेरा हो गया। वे अपने आपको बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए। और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला" (रोमियों १:१८-२३)।

सो हम देखते हैं, कि यद्यपि मनुष्य के भीतर परमेश्वर के अस्तित्व का ज्ञान तो है, परन्तु वास्तव में अधिकांश रूप से मनुष्य परमेश्वर की विशेषताओं वा गुणों से अनजान है। इसी कारण, बहुतेरे लोग परमेश्वर के पीछे अनजाने में चल रहे हैं। परन्तु यदि हम सचमुच में परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं, यदि हम वास्तव में सच्चे वा जीवते परमेश्वर की इच्छा को ही पूर्ण करना चाहते हैं, तो यह आवश्यक है कि उस परमेश्वर का उचित ज्ञान हमारे पास हो। और हम इसी खास बात के ऊपर विचार करने जा रहे हैं। हम सबका यह विश्वास है कि हमारा एक परमेश्वर है। हमारे इस विश्वास का मुख्य आधार परमेश्वर की सृष्टि है, जिसे उसने सृजा है। पवित्र बाइबल का एक लेखक कहता है, "आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकाशमन्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है।" (भजन १९:१)। परमेश्वर के अस्तित्व का ज्ञान हमारे मनों में उसकी सृष्टि को देखकर होता है। परन्तु वह परमेश्वर कौन है? उसकी विशेषताएं क्या हैं? क्या उसने हम पर अपने व्यक्तित्व को प्रगट किया है? हमारे इन सभी प्रश्नों का उत्तर हमें पवित्र बाइबल में मिलता है। जिस तरह सृष्टि को देखकर हमारे मनों में परमेश्वर के अस्तित्व का ज्ञान होता है, उसी तरह पवित्र बाइबल को पढ़कर हमें उस परमेश्वर के व्यक्तित्व और उसकी विशेषताओं का ज्ञान होता है। बाइबल में परमेश्वर ने हमें अपने बारे में बहुत सी बातें बताई हैं, ताकि हम जानें कि हमारा परमेश्वर वास्तव में क्या और कौन है।

सबसे पहिले, हम एक जगह यूं पढ़ते हैं, "परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें" (यूहन्ना ४:२४)। अकसर जब कभी लोग परमेश्वर के बारे में सोचते हैं तो वे अपने मनों में एक ऐसा चित्र बनाते हैं जो किसी बड़े बूढ़े ज्ञानी मनुष्य का सा हो। परन्तु परमेश्वर ममुष्य नहीं है। वह आत्मा है। परमेश्वर आत्मा है, इस कारण वह अनन्त है, अर्थात् जो था और जो है और जो हमेशा तक रहेगा। परमेश्वर का एक भक्त उस से प्रेरणा पाकर बाइबल में यूं कहता है, "हे प्रभु तू पीढ़ी से पीढ़ी

तक हमारा धाम बना है। इस से पहले कि पहाड़ उत्पन्न हुए, वा तू ने पृथ्वी और जगत की रचना की वरन अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही ईश्वर है" (भजन ९०:१,२)।

क्योंकि वह आत्मा और अनन्त है इस कारण वह सर्व-विद्यमान है, अर्थात् परमेश्वर सब जगह उपस्थित है। मनुष्य ऐसा कोई स्थान नहीं जानता जहां वह अपने आप को परमेश्वर से छिपा सके। सैंकड़ों वर्ष पूर्व दाऊद नबी ने इस बात का ज्ञान प्राप्त करके बाइबल में यूं कहा, "मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊं ? वा तेरे सामने में किधर भागूं ? यदि मैं आकाश पर चढ़ूं तो तू वहां है ! यदि मैं अपना बिछौना अधोलोक में बिछाऊं तो वहां भी तू है ! यदि मैं भोर की किरनों पर चढ़कर समुद्र के पार जा बसूं, तो वहां भी तू अपने हाथ से मेरी अगुवाई करेगा, और अपने दहिने हाथ से मुझे पकड़े रहेगा। यदि मैं कहूं कि अन्धकार में तो मैं छिप जाऊंगा, और मेरे चारों ओर का उजियाला रात का अन्धेरा हो जाएगा, तौभी अन्धकार तुझ से न छिपाएगा, रात तो दिन के तुल्य प्रकाश देगी; क्योंकि तेरे लिये अन्धियारा और उजियाला दोनों एक समान हैं" (भजन० १३९:७-१२)। यदि अपने आप को आप मनुष्य से छिपाना चाहें तो आप ऊंचे से ऊंचे स्थान पर चढ़ सकते हैं, नीचे से नीचे बने तहखाने के भीतर घुस सकते हैं। परन्तु आप परमेश्वर से अपने आप को एक पल के लिये भी कहीं पर भी नहीं छिपा सकते, क्योंकि वह सर्व-विद्यमान है, वह सब जगह उपस्थित है, और इसलिये वह सब कुछ जानता और सब बातों का ज्ञान रखता है। वह जानता है कि इस समय आप कहां हैं, आप क्या कर रहे हैं, और आपके मन में क्या-क्या विचार हैं। परमेश्वर से वास्तव में हम कुछ भी नहीं छिपा सकते। दाऊद, जिसने परमेश्वर की प्रेरणा से भविष्यवाणियों के द्वारा उसकी अनेकों बातों को बाइबल में लिखकर प्रगट किया, एक जगह परमेश्वर को सम्बोधित करके कहता है, "तू मेरा उठना बैठना जानता है; और मेरे विचारों को दूर ही से समझ लेता है, मेरे चलने और लेटने की तू भली-भांति छान-बीन करता है, और मेरे पूरे चाल-चलन का भेद जानता है" (भजन० १३९:२-३)।

न केवल वह सर्व-विद्यमान और सर्व-ज्ञानी ही है, परन्तु बाइबल हमें बताती है परमेश्वर महान वा सर्व-शक्तिशाली है। जब कभी हम गम्भीर होकर परमेश्वर की बनाई हुई सृष्टि के ऊपर विचार करते हैं तो हमारे आश्चर्य की सीमा नहीं रहती। यह पृथ्वी जिसकी न कोई टेक है, न सहारा है, छतरी की तरह खुला हुआ आकाश और उसमें मोतियों की तरह जड़े हुए झिलमिलाते अन-गिनत सितारे, चांद और सूरज का अपने-अपने समय पर निकलना, मौसम का बदलना, तरह-तरह के पेड़, फल और फूल जो हमारे जीवनों में सुन्दरता और आनन्द भर देते हैं, सुन्दर और अद्भुत पशु, पक्षी, इत्यादि। क्या आप जानते हैं, कि आदि में जब परमेश्वर ने इस अद्भुत सृष्टि की रचना की थी तो उसे किसी भी वस्तु की आवश्यकता न थी! उदाहरण स्वरूप, यदि आप बैठने के लिये एक छोटी सी कुर्सी बनाना चाहें, तो आप को लकड़ी की आवश्यकता पड़ेगी, आप को कीलों और औज़ारों की ज़रूरत पड़ेगी। परन्तु जब आदि में परमेश्वर ने इस विशाल और अत्यन्त ही अद्भुत सृष्टि की रचना की तो उसे किसी भी वस्तु की आवश्यकता न थी। पवित्र बाइबल बताती है कि परमेश्वर ने कहा, और वैसा ही हो गया, अर्थात् जब परमेश्वर ने कहा, "उजियाला हो," तो तुरन्त उजियाला हो गया। जब परमेश्वर ने कहा, "पृथ्वी से हरी घास, तथा बीजवाले छोटे छोटे पेड़, और फलदाई वृक्ष भी जिनके बीज उन्हीं में एक-एक की जाति के अनुसार होते हैं पृथ्वी पर उगें," तो वैसा ही हो गया, अर्थात् परमेश्वर ने कहा, और प्रत्येक वस्तु उसके वचनानुसार उत्पन्न हो गई।

एक बार जब एक बड़ा ही धनी मनुष्य प्रभु यीशु के पास उद्धार का मार्ग जानने के लिये आया, तो वह प्रभु की आज्ञा को कठिन जानकर उसके पास से उदास होकर चला गया। लिखा है, कि तब यीशु ने अपने चेलों की ओर फिरकर कहा, "कि धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है। फिर तुम से कहता हूं कि परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है। यह सुनकर चेलों ने बहुत चकित होकर कहा, फिर किसका उद्धार हो सकता है? यीशु ने उनकी ओर देखकर कहा, मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता,

परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है" (मत्ती १९:२३-२६)।

जी हां, परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है, क्योंकि वह सर्व-शक्तिमान है। चाहे आप कोई भी क्यों न हों, यदि आप परमेश्वर के सम्मुख अपने आप को नम्र बनाएंगे और अपने सारे पापों से मन फिराएंगे, और उसके पुत्र यीशु मसीह पर विश्वास करके अपने पापों की क्षमा के लिये उसकी आज्ञानुसार बपतिस्मा लेंगे, तो वह आपका उद्धार करेगा और आपको स्वर्ग में अनन्त जीवन देगा।

अब हमारे प्रोग्राम का समय लगभग समाप्त हो रहा है, इसलिये मैं आप से यह कहकर आज्ञा चाहूंगा, कि हम अपने अगले पाठ में इसी विषय पर और अधिक विचार करेंगे। परमेश्वर की आशीष हम सब पर हो।

६

अज्ञानता के कारण कोई न बचेगा

मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि एक बार फिर से उसने हमें यह अवसर प्रदान किया है कि हम एक साथ मिलकर अपने ध्यानों को उसकी ओर लगाएं। मुझे विश्वास तथा आशा है कि हम पूरी गम्भीरता के साथ उसके वचन को सुनेंगे और अपने आज के पाठ के ऊपर विचार करेंगे।

अपने पिछले पाठ में, आपको याद होगा, हमने इस बात के ऊपर विचार किया था कि हमें केवल परमेश्वर की उपस्थिति का ज्ञान होना ही पर्याप्त नहीं है, परन्तु यह भी आवश्यक है कि हम परमेश्वर के व्यक्तित्व को जानें अर्थात हमारा परमेश्वर वास्तव में कौन है और उसकी क्या विशेषताएं हैं, उसकी क्या इच्छा है, ताकि हमें इस बात का निश्चय हो सके कि जिसके पीछे हम चल रहे हैं वह वास्तव में सच्चा वा जीवता परमेश्वर है। आज संसार में बहुतेरे ऐसे लोग हैं जो किसी देवी या देवता की उपासना व्यर्थ में यह समझकर कर रहे हैं कि वे परमेश्वर की भक्ति वा उपासना कर रहे हैं। जबकि सच्चाई यह है कि वे सच्चे वा जीवते परमेश्वर को जानते तक भी नहीं, परन्तु अज्ञानता से, या यूं कहिए, कि अंध-विश्वास के द्वारा, उसके पीछे चलने का प्रयत्न कर रहे हैं।

इस बात से हमें बाइबल में लिखे उस वर्णन का स्मरण हो आता है जहां हम पढ़ते हैं, प्रेरित पौलुस अथेने नाम के एक नगर के लोगों के

बीच में खड़े होकर उनसे कहता है, "हे अथेने के लोगो मैं देखता हूं, कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े मानने वाले हो। क्योंकि मैं फिरते हुए तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी वेदी भी पाई, जिस पर लिखा था, कि "अनजाने ईश्वर के लिये।" सो जिसे तुम बिना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूं। जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता। न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह तो आप ही सब को जीवन और स्वास और सब कुछ देता है। उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं; और उनके ठहराए हुए समय, और निवास के सिवानों को इसलिये बान्धा है, कि वे परमेश्वर को ढूंढ़ें, कदाचित उसे टटोलकर पा जाएं तौ भी वह हम में से किसी से दूर नहीं। क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते फिरते, और स्थिर रहते हैं; जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, कि हम तो उसी के वंश भी हैं। सो परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं, कि ईश्वरत्व, सोने या रुपये या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हों। इसलिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है" (प्रेरितों १७ : २२-३१)।

इस वर्णन में हम देखते हैं कि प्रेरित उन लोगों से कहता है, यद्यपि तुम भक्ति वा उपासना कर रहे हो परन्तु वह अज्ञानता के कारण से है, इसलिये वह व्यर्थ और बिना किसी लाभ के है। और फिर वह उन्हें उस सच्चे वा महान परमेश्वर के बारे में सच्चाई बताता है, जिसे वे लोग अज्ञानता से मान रहे थे। वह कहता है, वह परमेश्वर स्वर्ग और पृथ्वी और जो कुछ उनमें है उन सबका बनानेवाला है, अर्थात् सब कुछ उसका है और उसके द्वारा है। और इस सच्चाई के आधार पर

वह कहता है, इस कारण वह परमेश्वर मनुष्यों के हाथों के बनाए हुए घरों व मन्दिरों में नहीं रहता, क्योंकि वह स्वयं ही सारी वस्तुओं का रचनेवाला है, अर्थात् हम उसे किसी भी तरह से कैद या सीमित नहीं कर सकते, क्योंकि वह अनन्त, आत्मा, सर्व-विद्यमान, सर्व-ज्ञानी और सर्व-शक्तिमान् है : और फिर वह कहता है, हम उसके वंश हैं, अर्थात् हम उसकी समानता पर बनाए गए हैं। परमेश्वर आत्मा है, और मनुष्य एक आत्मिक प्राणी है। इस कारण यह उचित नहीं कि हम अपनी कारीगरी और कल्पना से गढ़कर, सोने या रुपये या पत्थर इत्यादि की समानता में परमेश्वर की कोई मूरत या सूरत बनाए, क्योंकि इस प्रकार न तो हम परमेश्वर को केवल सीमित ही करने का प्रयत्न करते हैं परन्तु हम उसे नाशमान वस्तुओं का रूप देते हैं। वे लोग ठीक ऐसा ही कर रहे थे, इसलिये वह कहता है कि परमेश्वर तुम्हारी इन अज्ञानता की बातों को टालकर अब तुम्हें और पृथ्वी पर सब मनुष्यों को इन बातों से मन फिराने की आज्ञा देता है। इसका कारण वह आगे यूं कहकर बताता है, क्योंकि परमेश्वर ने एक दिन ठहराया है जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है, और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है। और वह व्यक्ति है प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर का एकलौता पुत्र, जो हमारे पापों के लिये मारा गया और तद्पश्चात कब्र में गाड़ा गया, परन्तु पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन फिर जी उठा, और तब स्वर्ग में उठा लिया गया, और अब न्याय के दिन वह फिर से प्रगट होगा।

सो हम देखते हैं, अज्ञानता के कारण किसी का उद्धार न होगा, अर्थात अज्ञानता परमेश्वर के न्याय से बचने का कोई बहाना नहीं है। यदि कोई परमेश्वर के बारे में अज्ञान है, या उसकी भक्ति वा उपासना अज्ञानता के साथ कर रहा है, तो वह इस धोखे में न रहे कि वह परमेश्वर के न्याय से बच जाएगा, क्योंकि पवित्र शास्त्र कहता है. "परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं। इसलिये कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उनके मनों में प्रगट हैं, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया

है। क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात उसकी सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि उनका निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया। वे अपने आपको बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए। और अबिनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला" (रोमियों १ : १८-२५)। इस प्रकार के लोग परमेश्वर का ज्ञान तो अपने मनों में अवश्य रखते है, परन्तु वे उसके पीछे अज्ञानता के साथ चल रहे हैं, इस कारण वे नाश होंगे।

पवित्र बाइबल में एक जगह लिखा है, जब प्रभु यीशु न्याय के दिन प्रगट होगा तो वह उन सबसे पलटा लेगा जो परमेश्वर को नहीं पहिचानते या जानते और जो उसके सुसमाचार की आज्ञाओं को नहीं मानते, वे उसके सामने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे। (२ थिस्सलुनीकियों १ : ७-९)।

मित्रो, मैं आपको बताना चाहता हूं कि परमेश्वर आपसे प्रेम करता है, वह हम सबसे प्रेम करता है, और हमें पाप के दन्ड से मुक्ति दिलाकर स्वर्ग के राज्य में प्रवेश दिलाने के लिये उसने अपने एकलौते पुत्र को हमारे बदले में बलिदान कर दिया। अब वह चाहता है कि आप उसके पुत्र यीशु मसीह में विश्वास करें जो हमारे बदले में मारा गया, और वह चाहता है कि आप अपनी सारी अज्ञानता से मन फिराकर, अपने पुराने मनुष्यत्व को सदा के लिये बपतिस्मे की कब्र में दफ़ना दें, और प्रभु यीशु के द्वारा, उसके ज्ञान और सच्चाई में, उद्धार पाने के लिये दिन-प्रति-दिन बढ़ते जाए।

अपने अगले पाठ में हम इस विषय पर और अधिक विचार करेंगे। तब तक के लिये मैं आपसे आज्ञा चाहता हूं। परमेश्वर का अनुग्रह हम सब पर बना रहे।

७

परमेश्वर की विशेषताएं

आपको याद होगा कि अपने पिछले दो पाठों में हमने इस बात को देखा था कि परमेश्वर की विशेषताएं या विशेष गुण क्या है। हमने यह भी देखा था कि हमारे लिये इतना ही बहुत नहीं है कि हमें इस बात का ज्ञान हो कि एक परमेश्वर है, परन्तु आवश्यक यह है, कि हम उस सच्चे वा जीवते परमेश्वर के व्यक्तित्व से परिचित हो, अर्थात वह परमेश्वर कौन है जिसकी भक्ति वा उपासना हमें करनी चाहिए, उसकी क्या विशेषताएं हैं, उसकी क्या इच्छा है? अपने पिछले दो पाठों में हमने देखा था कि परमेश्वर ने अपने स्वभाव वा अपनी इच्छा को अपने वचन पवित्र बाइबल में मनुष्यों पर प्रगट किया है। फिर बाइबल में से हमने परमेश्वर के बारे में देखा था कि वह आत्मा है, और अनन्त है, अर्थात जो था और जो है और जो सर्वदा रहेगा, उसने संपूर्ण जगत की सृष्टि की है, और वह सर्व-विद्यमान, सर्व-ज्ञानी तथा सर्व-शक्तिमान है।

अब अपने आज के पाठ में हम परमेश्वर की कुछ अन्य विशेषताओं के ऊपर विचार करेंगे। सबसे पहिले, हम देखते हैं, कि परमेश्वर कभी बदलता नहीं। पवित्र शास्त्र में एक जगह हम यूं पढ़ते हैं, "ईश्वर मनुष्य नहीं कि झूठ बोले, और न वह आदमी है कि अपनी इच्छा बदले। क्या जो कुछ उसने कहा उसे न करे? क्या वह वचन देकर उसे पूरा न करे?" (गिनती २३:१९)। मनुष्य अपने लाभ के लिये झूठ बोल सकता

है, और वचन देकर फिर सकता है, परन्तु परमेश्वर अपने वचन और प्रतिज्ञाओं में सच्चा है। इस बात के अनेकों उदाहरण परमेश्वर के वचन, बाइबल, में हमारे पास मौजूद हैं। जैसे कि हम देखते हैं, आदम और हव्वा से आरम्भ में परमेश्वर ने कहा था कि यदि वे उसकी आज्ञा तोड़ेंगे तो वे मर जाएंगे, और जब उन्होंने उसकी आज्ञा तोड़ी तो उन्हें ठीक वही दण्ड मिला जिसकी प्रतिज्ञा उसने उनसे की थी। इसी तरह, जब नूह के दिनों में परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि पाप के कारण वह लोगों को जल प्रलय भेजकर नाश करेगा, तो वह अपने वचन से नहीं फिरा। इसी प्रकार, परमेश्वर ने हज़ारों वर्ष पूर्व कहा था कि वह जगत के पापों के लिये अपने पुत्र को प्रायश्चित ठहराएगा, और आज से दो हज़ार वर्ष पूर्व जब यीशु मसीह हमारे पापों के लिये क्रूस पर मारा गया, तो परमेश्वर ने इस प्रकार अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया।

किन्तु, हमें याद रखना चाहिए कि अभी कुछ ऐसी प्रतिज्ञाएं भी हैं जो परमेश्वर ने हमारे साथ की हैं, और इसमें कोई संदेह नहीं कि जिस तरह वह पहिले कभी अपने वचन से नहीं फिरा, भविष्य में भी वह कभी अपने वचन से न फिरेगा। क्योंकि परमेश्वर कभी बदलता नहीं। उसने हमें कुछ विशेष आज्ञाएं दी हैं, और उसने प्रगट किया है कि यदि हम उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करेंगे तो हम अपने ही पापों में नाश होंगे। उसने हमारे पापों के कारण अपने पुत्र यीशु मसीह को क्रूस के ऊपर बलिदान किया, ताकि उसके द्वारा हम अनन्त जीवन पाएं; और अब उसकी इच्छा है कि हम सब उसके पुत्र यीशु में विश्वास करें, और अपने पापों से पश्चाताप करें, और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मे के द्वारा जल रूपी कब्र के भीतर अपने पुराने मनुष्यत्व को दफ़न करके उसमें नए जीवन की चाल चलें। और उसने हमें बड़े ही स्पष्ट शब्दों में चेतावनी दी है कि यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो हम अनन्त विनाश का दन्ड पाएंगे। हमें इन बातों को गलत या महत्वरहित समझकर ठट्ठों में उड़ाने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर अपने वचन से न कभी फिरा है और न कभी फिरेगा, क्योंकि वह कभी बदलता नहीं। उसके वचन की पुस्तक में हम पढ़ते हैं, "क्योंकि परमेश्वर

ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए" (यूहन्ना ३:१६)। एक अन्य स्थान पर लिखा है, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा" (मरकुस १६:१६)। हमें यह भी याद रखना चाहिए, कि परमेश्वर ने बड़े ही खुले शब्दों में हमें उस आने वाले दिन के बारे में चेतावनी दी है जिस दिन वह हम सबका अपने वचन के अनुसार न्याय करेगा। प्रेरित पौलुस एक जगह लिखकर कहता है, "हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे। क्योंकि लिखा है, कि प्रभु कहता है, मेरे जीवन की सौगन्ध कि हर एक घुटना मेरे सामने टिकेगा, और हर एक जीभ परमेश्वर को अंगीकार करेगा। सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा" (रोमियों १४:१०-१२)।

न केवल परमेश्वर कभी बदलता नहीं, किन्तु उसका वचन हमें यह भी बताता है कि वह कभी किसी का पक्षपात नहीं करता। पवित्र शास्त्र का लेखक कहता है, "क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा वही ईश्वरों का परमेश्वर और प्रभुओं का प्रभु है, वह महान पराक्रमी और भय योग्य ईश्वर है, जो किसी का पक्ष नहीं करता, और न घूस लेता है" (व्यवस्थाविवरण १०:१७)। प्रभु यीशु के प्रथम चेलों के मध्य एक बड़ा ही प्रचलित विश्वास यह था कि क्योंकि यीशु का जन्म यहूदियों के बीच में हुआ और उन्हीं के बीच रहकर उसने अपने काम किए, और वे ही सबसे पहिले उसके अनुयायी बने, सो यहुदी ही उद्धार पाएंगे। परन्तु परमेश्वर ने बड़े ही आश्चर्यजनक ढंग से उन पर इस बात को प्रगट किया कि यीशु सारे जगत के लोगों के लिये पृथ्वी पर आया, उसने सारे जगत के लोगों के लिये अपनी जान दी, और उसका सुसमाचार हर एक के लिये है, और प्रत्येक जन उसके द्वारा अनन्त जीवन प्राप्त करेगा। जब प्रेरित पतरस ने इस बात को देखा तो उसने कहा, "अब मुझे निश्चय हुआ, कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, बरन हर जाति में जो उस से डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है।"

(प्रेरितों १०:३५)। इसका अर्थ यह है, यदि हम परमेश्वर से डरते और उसकी इच्छा पर चलते हैं, जैसा कि पवित्र वचन बाइबल में उसने हमें बताया है, तो हम चाहे किसी भी देश, जाति, रंग, या सांसकृति के क्यों न हों, वह हमें अवश्य ही अनन्त जीवन देगा।

मित्रो, मैं नहीं जानता कि आप के मन में इस समय किस-किस तरह के विचार उठ रहे हैं। कदाचित आपके पास बैठा हुआ व्यक्ति भी इस बात को नहीं जानता, परन्तु मैं एक बात अवश्य जानता हूं, अर्थात यह कि परमेश्वर आपके मन को भली-भांति जानता है, वह आपके विचारों से खूब अच्छी तरह परिचित है, और वह जानता है कि आप इस समय क्या सोच रहे हैं! क्या आप उसके वचन का उपहास वा ठट्ठा कर रहे हैं? क्या आप उसके वचन को गम्भीरता के साथ सुन रहे है? क्या आप उसकी इच्छा पर चलने का निश्चय कर रहे हैं? याद रखिए, परमेश्वर की यह विशेषता है कि वह मनुष्यों के मन वा विचारों से भली भांति परिचित है। लिखा है, "क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है" (१ शमूएल १६:७)। प्रभु यीशु ने कहा, "कोई दास दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता: क्योंकि वह तो एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा; या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा: तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते। फरीसी जो लोभी थे, ये सब बातें सुनकर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगे। उसने उनसे कहा; तुम तो मनुष्यों के सामने अपने आपको धर्मी ठहराते हो: परन्तु परमेश्वर तुम्हार मन को जानता है, क्योंकि जो वस्तु मनुष्यों की दृष्टि में महान है, वह परमेश्वर के निकट घृणित है" (लूका १६:१३-१५)।

कौन सी वस्तु आपके निकट सबसे अधिक महत्वपूर्ण है? धन, मान, ज़मीन, जायदाद? परन्तु परमेश्वर कहता है, "तुम न तो संसार से और न संसार की वस्तुओं से प्रेम रखो...संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा" (१ यूहन्ना २: १५,१७)। प्रभु यीशु ने कहा, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए,

तो उसे क्या लाभ होगा ? और मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा ?" (मरकुस ८:३६,३७)। परमेश्वर की दृष्टि में जिस वस्तु का सबसे अधिक महत्त्व है, और जिस वस्तु को मनुष्य कोई विशेष महत्व नहीं देता, वह वस्तु है मनुष्य की आत्मा। परमेश्वर ने हमारी आत्मा को बचाने के लिये अपने एकलौते पुत्र यीशु मसीह को बलिदान कर दिया, क्योंकि वह हम सबसे प्रेम करता है—और परमेश्वर की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि वह प्रेम है।

हम इस विषय में अगली बार फिर देखेंगे। प्रभु आपको आशीष दे।

८

परमेश्वर प्रेम है

जैसा कि आप जानते ही हैं, अपने पिछले कुछ पाठों में हमने परमेश्वर की कुछ विभिन्न विशेषताओं के ऊपर विचार किया है, और आज परमेश्वर की जिस बड़ी ही मुख्य विशेषता के ऊपर हम विचार करने जा रहे हैं, वह यह है, कि परमेश्वर प्रेम है।

यूहन्ना नाम का यीशु का एक चेला, जो प्रेरित भी था, अपनी एक पत्री में यीशु के अन्य अनुयायीयों को एक जगह लिखकर यूं कहता है: "हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है : और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है; और परमेश्वर को जानता है। जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इससे प्रगट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। प्रेम इसमें नहीं, कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इसमें है, कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा। हे प्रियो, जब परमेश्वर ने हमसे ऐसा प्रेम किया, तो हमको भी आपस में प्रेम रखना चाहिए। परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा; यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो परमेश्वर हम में बना रहता है; और उसका प्रेम हम में सिद्ध हो गया है...और जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, उसको हम जान गए, और हमें उसकी

प्रतीति है; परमेश्वर प्रेम है : और जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है; और परमेश्वर उसमें बना रहता है" (१ यूहन्ना ४ : ७-१२, १६)।

यहां हम देखते हैं कि परमेश्वर को विशेष रूप से "प्रेम" कह कर सम्बोधित किया गया है, और वास्तव में यह बिलकुल उचित है, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। वह हम में से हर एक से बहुत अधिक प्रेम करता है, और जैसा कि अभी हमने पढ़ा कि उसने हमसे यहां तक प्रेम रखा कि हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये उसने अपने एकलौते पुत्र को भी दे दिया। परन्तु जब हम परमेश्वर को प्रेम कहते हैं, तो इससे हमारा क्या अभिप्राय है ? क्या इसका अर्थ यह है, परमेश्वर हमसे ऐसा प्रेम करता है जैसा कि एक पिता अपने बालक से करता है जो उसकी हर एक इच्छा को पूरा करता है, और उसे कभी भी डांटता या धमकाता नहीं ? या क्या परमेश्वर हमसे ऐसा प्रेम करता है जैसे कि एक माता अपने बच्चों से करती है और प्रेम के कारण उनकी बहुत सी बुरी और अनुचित बातों को भी छिपा लेती है ? जी नहीं, परमेश्वर हमसे ऐसा प्रेम नहीं करता। किन्तु हम जानते हैं, कि इस प्रकार का प्रेम सुधारने के विपरीत मनुष्य को ज़िद्दी और खराब बना डालता है। परन्तु बाइबल हमें इस प्रकार बताती है, "क्योंकि प्रभु, जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है; और जिसे पुत्र बना लेता है, उसे कोड़े भी लगाता है" (इब्रानियों १२ : ६)। वास्तव में, परमेश्वर के प्रेम की तुलना किसी भी तरह के सांसारिक प्रेम के साथ नहीं की जा सकती, क्योंकि उसके प्रेम में किसी भी तरह का स्वार्थ नहीं है, और न उसने हमसे इसलिये प्रेम किया कि हममें कोई अच्छाई या खूबी है। जब हम किसी वस्तु या मनुष्य से प्रेम करते हैं तो हम उसमें कोई विशेषता या सुन्दरता पाते हैं; हम केवल उन्हीं लोगों से प्रेम करते हैं जो हमसे प्रेम करते हैं। परन्तु, "जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, वह इससे प्रगट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। प्रेम इसमें नहीं, कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इसमें है, कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने

पुत्र को भेजा।"

हम देखते हैं, कि जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है, उसे उसने अपने एकलौते पुत्र को जगत में हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये भेजकर प्रगट किया। इतना बड़ा यह बलिदान उसने हमारे लिये इस कारण नहीं किया कि हमने उससे प्रेम रखा, परन्तु जबकि हम उससे दूर, पापों में, उसकी इच्छा के विरोध में, जीवन व्यतीत कर रहे थे, उस समय उसने हमारे लिये अपने एकलौते पुत्र को दे दिया, क्योंकि वह हमसे सचमुच में प्रेम करता है, और हमें पाप से मुक्ति दिलाकर अनन्त जीवन देना चाहता है।

मान लीजिये, यदि परमेश्वर आपके ऊपर अपने प्रेम को आपको बहुत सारा धन, भोजन, वस्त्र तथा सम्पत्ति इत्यादि देकर प्रगट करता, तो क्या इस प्रकार आपकी आत्मा का उद्धार हो पाता? कदापि नहीं। दूसरी ओर परमेश्वर को कोई बलिदान भी नहीं करना पड़ता, क्योंकि वह तो आप ही सब वस्तुओं का बनाने वाला वा उत्पन्न करने वाला है। परन्तु परमेश्वर आपकी आत्मा के महत्त्व को जानता है; वह जानता है कि किसी भी मनुष्य का जीवन उसके धन-सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता (लूका १२ : १५)। इसी कारण, उसने आपको और मुझे पाप के दण्ड, अनन्त मृत्यु से बचाने के लिये इतना बड़ा बलिदान किया, अर्थात, उसने अपने एकलौते पुत्र यीशु को हमारे कारण क्रूस के ऊपर मृत्यु दण्ड दिलवाया।

यदि जगत में एक भी मनुष्य यीशु की तरह सिद्ध वा पाप-रहित होता, तो क्या परमेश्वर अपने पुत्र को स्वर्ग से पृथ्वी पर मरने के लिये भेजता? यदि आपको और मुझे, और सारे जगत को मुक्ति की आवश्यकता न होती, तो क्या परमेश्वर को इतना बड़ा बलिदान देना होता? यदि परमेश्वर ने जगत से ऐसा बड़ा प्रेम न रखा होता, तो क्या वह अपने पुत्र को हमारे पापों के कारण प्रायश्चित ठहराकर दण्डित करता? परन्तु परमेश्वर के वचन बाइबल में हमें इस प्रकार मिलता है, "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा। किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या

जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा" (रोमियों ५ : ६-८)।

मसीह हमारे लिये तब मरा जब हम पापी वा अधर्मी थे। परमेश्वर ने अपने पुत्र को हमारा प्रायश्चित ठहराकर उस समय बलिदान किया जब हम अयोग्य वा भक्तिहीन थे। प्रभु यीशु, परमेश्वर का पुत्र, जिसने हमारे पापों को अपने ऊपर लेकर हमारे स्थान पर हमारे पापों का दन्ड सहा, उसके बारे में पवित्र बाइबल हमें यूं बताती है, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था.....और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा" (यूहन्ना १ : १, २, १४)। जब हम इस बात के ऊपर विचार करते हैं, तो हम देखते हैं, कि वह वचन जो आदि में परमेश्वर के साथ था और जो परमेश्वर था, उसी को उसने अपने ईश्वरीय ज्ञान के द्वारा मनुष्य का सा देहधारी बनाकर इस जगत में भेज दिया, और वह परमेश्वर का पुत्र कहलाया, अर्थात्, परमेश्वर स्वयं प्रभु यीशु मसीह में होकर हमें बचाने के लिये इस पृथ्वी पर आ गया, और हमारे पापों के कारण हमें नाश करने के विपरीत उसने हमारे अपराधों का दोष अपने ऊपर ले लिया; यद्यपि उसमें कोई पाप न था तौ भी वह हमारे पापों के कारण क्रूस के ऊपर लटकाकर मारा गया। यह सब परमेश्वर के होनहार के ज्ञान के अनुसार हुआ। परमेश्वर मनुष्य को बचाना चाहता था, किन्तु वह पाप को दन्डित करना चाहता था। और क्योंकि वह हमसे बहुत अधिक प्रेम करता है, इसलिये उसने हमें दन्ड दिए बिना हमें बचाने की योजना बनाई, अर्थात उसने हमारे अपराधों के कारण अपने पुत्र यीशु को दोषी ठहराकर दन्ड दिलवाया। और इसी से हम जानते हैं कि परमेश्वर प्रेम है।

मित्रो, परमेश्वर आपसे प्रेम करता है, वह आपकी आत्मा को

बचाना चाहता है; और आपका उद्धार करने के लिये उसने अपने पुत्र को भी बलिदान कर दिया। और अब वह चाहता है कि आप उसके पुत्र यीशु में विश्वास करें जिसने आपको बचाने के लिये अपनी जान दी, और अपने सारे पापों से मन फिराएं, और फिर यीशु का बपतिस्मा लेकर उसकी मृत्यु और जी उठने की समानता में एक हो जाएं, ताकि आगे को आप उस नए जीवन की चाल चलें जिसके लिये परमेश्वर ने आपको सृजा है (रोमियों ६ : १-५)।

उसी का प्रेम आपकी आत्मा की रक्षा करे।

९

बड़ी और मुख्य आज्ञा

इस अत्यन्त ही सुंदर अवसर के लिये परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए, आईए, हम अपने आज के पाठ के ऊपर विचार करें। आज हम एक बड़ी ही आवश्यक और मुख्य आज्ञा के बारे में देखने जा रहे हैं, और मेरा विश्वास है कि हम सब मिलकर बड़ी ही गम्भीरता के साथ इन बातों के ऊपर ध्यान देंगे।

प्रभु यीशु के दिनों में, अर्थात् जिस समय वह पृथ्वी पर था, दो बड़े ही प्रसिद्ध विरोधी पक्ष वर्तमान थे। ये लोग फ़रीसी और सदूकी कहलाते थे। यूं तो ये दोनों ही पक्ष आपस में एक दूसरे के विरोधी थे, परन्तु ये दोनों ही मिलकर यीशु के बड़े ही कट्टर विरोधी बन गए थे, और इसका मुख्य कारण यह था कि यद्यपि ये दोनों की पक्ष अपने आपको बड़ा ही धार्मिक समझते और कहते थे, किन्तु ये लोग धर्म की आड़ में बड़े ही अन्धकारपूर्ण और अन्याय के काम करते थे। जब यीशु ने उनकी आलोचना वा निन्दा की, तो वे यीशु को अपना एक बहुत बड़ा शत्रु समझने लगे। बाइबल में कई जगह हमें मिलता है, कि कभी फ़रीसी यीशु के पास आकर उसे परखने वा फसाने के दृष्टिकोण से उस से तरह-तरह के प्रश्न पूछते थे तो कभी सदूकी—और उनका मुख्य उद्देश्य केवल यही होता था कि किसी प्रकार वे लोगों के सामने यह सिद्ध कर दें कि यीशु की शिक्षाओं में दोष है और यीशु वास्तव में वह नहीं है जो वह होने का दावा करता था।

सो एक जगह हम पढ़ते हैं: "जब फ़रीसियों ने सुना, कि उस ने सदूकियों का मुंह बन्द कर दिया; तो वे इकट्ठे हुए। और उन में से एक व्यवस्थापक ने परखने के लिये, उस से पूछा : हे गुरु; व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है ? उस ने उस से कहा, तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार हैं" (मत्ती २२:३४-४०)।

और फिर एक और जगह हम यूं पढ़ते हैं, "और देखो, एक व्यवस्थापक उठा; और यह कहकर उसकी परीक्षा करने लगा; कि हे गुरु, अनन्त जीवन का वारिस होने के लिये मैं क्या करूं ?" यीशु ने उस से कहा, "कि व्यवस्था में क्या लिखा है ? तू कैसे पढ़ता है ? उसने उत्तर दिया, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।" यीशु ने उस मनुष्य से कहा, "तू ने ठीक उत्तर दिया, यही कर : तो तू जीवित रहेगा।" परन्तु उस व्यवस्थापक ने अपने आपको धर्मी ठहराने के दृष्टिकोण से यीशु से पूछा, "तो मेरा पड़ोसी कौन है ?" सो यीशु ने उसे एक बड़ा ही सुंदर दृष्टान्त देकर यूं कहा, कि एक मनुष्य यरुशलेम से यरीहो को जा रहा था (यह इलाका बड़ा ही पहाड़ी और सून-सान था), कि मार्ग में डाकुओं ने घेरकर उसे लूट लिया, और मारपीटकर वे उसे अधमुआ छोड़कर चले गए। सो ऐसा हुआ, कि कुछ समय बाद, उसी मार्ग से होकर एक याजक जा रहा था, वह कादाचित मंदिर की ओर जा रहा होगा, परन्तु वह उस मनुष्य को पड़ा हुआ देखकर कतराकर चला गया। इसी तरह से, कुछ समय पश्चात् एक लेवी भी उस जगह पर आया, वह भी शायद उसी याजक के साथ मन्दिर में सेवा किया करता था, लेकिन वह भी उस मनुष्य को देखकर कतराकर निकल गया। यीशु ने आगे कहा, कि कुछ देर बाद ऐसा हुआ कि एक सामरी यात्री उसी मार्ग से होकर जा रहा था (सामरी लोगों से उन दिनों में बड़ी ही घृणा की जाती थी),

किन्तु यीशु ने कहा, कि उस सामरी को उस मनुष्य को देखकर बड़ा ही तरस आया, सो उसने उसके पास आकर उसके घावों पर दवा इत्यादि लगाकर पट्टियां बांधी, और फिर वह उसे अपनी सवारी पर बिठाकर एक सराय में ले गया, और उसकी सेवा टहल की। दूसरे दिन उसने दो दीनार निकालकर भटियारे को दिए, और कहा : इसकी सेवा टहल करना, और जो कुछ तेरा और लगेगा, वह मैं लौटने पर तुझे भर दूंगा। यह कहकर, यीशु ने उस व्यवस्थापक से पूछा, "अब तेरी समझ में जो डाकुओं में घिर गया था, इन तीनों में से उसका पड़ोसी कौन ठहरा ?" उस ने कहा, "वही जिस ने उस पर तरस खाया।" यीशु ने उस से कहा, "जा, तू भी ऐसा ही कर।"

यहां हम देखते हैं, कि न केवल यीशु ने यही बताया कि सबसे बड़ी वा मुख्य आज्ञा क्या है, परन्तु उसने हमें यह भी सिखाया कि इस मुख्य आज्ञा का पालन हमें किस तरह से करना चाहिए। वास्तव में मसीही धर्म की नेव ही प्रेम है। यदि हम मसीही धर्म में से प्रेम को निकाल दें तो उसमें कुछ भी न बचेगा। यही कारण है कि मसीहीयत में आज हर प्रकार के लोग शामिल हैं, हर एक रंग, जाति, देश, संस्कृति इत्यादि के लोग आज मसीही हैं, और वे सब मसीह यीशु में एक हैं। प्रेरित पौलुस एक जगह कहता है, "क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हों, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा (अर्थात् एक ही आत्मा की शिक्षा के द्वारा), एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया" (१ कुरिन्थियों १२:१३)। और फिर, वह एक और जगह कहता है, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है परमेश्वर की संतान हो, और तुम में से जितनों ने मसीह में बिपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है। अब न कोई यहूदी रहा न यूनानी; न कोई दास, न स्वतंत्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो" (गलतियों ३:२६-२८)।

मसीही धर्म प्रेम का धर्म है, यह हमें सिखाता है, "प्रेम निष्कपट हो; बुराई से घृणा करो; भलाई में लगे रहो। भाईचारे के प्रेम से एक

दूसरे पर मया रखो; परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो। प्रयत्न करने में आलसी न हो; आत्मिक उन्माद में भरे रहो; प्रभु की सेवा करते रहो। आशा में आनन्दि रहो; क्लेश में स्थिर रहो; प्रार्थना में नित्य लगे रहो। पवित्र लोगों को जो कुछ अवश्य हो, उस में उन की सहायता करो; पहुनाई करने में लगे रहो। अपने सताने वालों को आशीष दो; आशीष दो, स्त्राप न दो। आनन्द करने वालों के साथ आनन्द करो; और रोने वालों के साथ रोओ। आपस में एक सा मन रखो; अभिमानी न हो; परन्तु दीनों के साथ संगति रखो; अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो। बुराई के बदले किसी से बुराई न करो; जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं, उनकी चिन्ता किया करो। जहां तक हो सके, तुम अपने भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल-मिलाप रखो। हे प्रियो अपना पलटा न लेना; परन्तु क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूंगा। परन्तु यदि तेरा बैरी भूखा हो, तो उसे खाना खिला; यदि प्यासा हो, तो उसे पानी पिला; क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा। बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो...आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्ज़दार न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है। क्योंकि यह कि व्यभिचार न करना, हत्या न करना; चोरी न करना; लालच न करना; और इनको छोड़ ओर कोई भी आज्ञा हो तो सब का सारांश इस बात में पाया जाता है, कि अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता, इसलिये प्रेम रखना व्यवस्था को पूरा करना है" (रोमियों १२:९-२१; १३:८-१०)।

क्या आप जानते हैं कि आज संसार में मसीही धर्म क्यों है? इसका केवल एक ही कारण है, और वह यह है, क्योंकि परमेश्वर ने जगत स ऐसा प्रेम रखा, कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए" (यूहन्ना ३:१६)। परमेश्वर ने हम में से प्रत्येक से ऐसा प्रेम रखा कि उसने हमें बचाने के लिये अपने पुत्र को बलिदान कर दिया। यीशु

मसीह ने हमें नरक में जाने से बचाने के लिये अपनी जान को कुर्बान कर दिया, क्योंकि वह हम में से हर एक से बहुत अधिक प्रेम करता है। और इसलिये हमें चाहिए कि हम अपने परमेश्वर से अपने सारे मन, प्राण, शक्ति और बुद्धि से प्रेम रखें, और आपस में एक-दूसरे के साथ अपने समान प्रेम रखें। ऐसा प्रेम हम में केवल तभी हो सकता है, यदि हम यीशु मसीह में हों, क्योंकि वही हमें सच्चे प्रेम के लिये प्रोत्साहन और ज्ञान देता है। क्या आप यीशु मसीह में हैं? क्या आप उसकी आज्ञाओं को मानते हैं? यदि आप विश्वास के साथ उसके पास आएंगे तो वह आपकी सहायता और उद्धार करेगा।

परमेश्वर आपको अपने वचन पर चलने की सामर्थ दे।

१०

क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है ?

हम सचमुच में ही बड़े भाग्यशाली हैं कि आज हम एक ऐसे युग में रहते हैं, जिसमें हमें नाना प्रकार की सुविधाएं प्राप्त हैं। आज से कुछ ही वर्ष पहिले हमारे पूर्वज कदाचित् बैठकर सोचते होंगे कि यदि वे अपना कोई संदेश एक जगह से दूसरे स्थान तक तुरन्त ही पहुंचा सकते तो कितना अच्छा होता। रेडियो, टेलीविज़न और टेलीफोन जैसे यंत्र उन लोगों के लिये केवल कल्पना मात्र ही थे। परन्तु आज हमारे निकट यह सब प्रतिदिन की सच्चाई है। मुझे नहीं मालूम कि आप इस समय किस स्थान पर है; मैं आप में से अधिकांश लोगों को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता, मैं नहीं जानता की आपका घर कौन से नगर या गांव में है, मुझे यह भी नहीं मालूम कि आपका नाम क्या है या आपके परिवार में कितने सदस्य हैं। किन्तु मैं एक बात जानता हूं, कि इस समय मैं आपसे बातें कर रहा हूं, और आप बड़ी ही गम्भीरता के साथ परमेश्वर के वचन को सुनने की प्रतिक्षा कर रहे हैं। यह सचमुच में मेरे लिये बड़े ही आनन्द की बात है।

आज मैं आपको एक ऐसे मनुष्य के बारे में बताऊंगा जो जन्म से अन्धा था, परन्तु प्रभु यीशु ने उसकी आंखें खोलीं और वह देखने लगा। इस सम्बन्ध में हम यूँ पढ़ते हैं, "फिर जाते हुए यीशु ने एक मनुष्य को देखा, जो जन्म का अन्धा था। और उसके चेलों ने उस से पूछा, हे रब्बी,

किसने पाप किया था; कि यह अन्धा जन्मा ? इस मनुष्य ने, या इसके माता-पिता ने ? यीशु ने उत्तर दिया, कि न तो इसने पाप किया था; न इसके माता पिता ने : परन्तु यह इसलिये हुआ, कि परमेश्वर के काम उसमें प्रगट हों। जिसने मुझे भेजा है; हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है : वह रात आनेवाली है जिसमें कोई काम नहीं कर सकता। जब तक मैं जगत में हूं, तब तक जगत की ज्योति हूं। यह कहकर उसने भूमि पर थूका और उस थूक से मिट्टी सानी, और वह मिट्टी उस अन्धे की आंखों पर लगाकर उससे कहा: जा शीलोह के कुन्ड में धो ले, सो उसने जाकर धोया, और देखता हुआ लौट आया। तब पड़ोसी और जिन्होंने पहिले उसे भीख मांगते देखा था, कहने लगे; क्या यह वही नहीं जो बैठा भीख मांगा करता था ? कितनों ने कहा, यह वही है: औरों ने कहा नहीं; परन्तु उसके समान है : उसने कहा, मैं वही हू। तब वे उससे पूछने लगे, तेरी आंखें क्योंकर खुल गईं ? उसने उत्तर दिया, कि यीशु नाम एक व्यक्ति ने मिट्टी सानी, और मेरी आंखों पर लगाकर मुझसे कहा, कि शिलोह में जाकर धो लें; सो मैं गया, और धोकर देखने लगा। उन्होंने उससे पूछा; वह कहां है ? उसने कहा; मैं नहीं जानता।

लोग उसे, जो पहिले अन्धा था, फ़रीसियों के पास ले गए। जिस दिन यीशु ने मिट्टी सानकर उसकी आंखें खोलीं थी, वह सब्त का दिन था। फिर फ़रीसियों ने भी उससे पूछा; तेरी आंखें किस रीति से खुल गईं ? उसने उनसे कहा; उसने मेरी आंखों पर मिट्टी लगाई, फिर मैंने धो लिया, और अब देखता हूं। इस पर कई फ़रीसी कहने लगे; यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं, क्योंकि वह सब्त का दिन नहीं मानता। औरों ने कहा, पापी मनुष्य क्योंकर ऐसे चिन्ह दिखा सकता है ? सो उनमें फूट पड़ी। उन्होंने उस अन्धे से फिर पूछा, उसने जो तेरी आंखें खोलीं, तू उसके विषय में क्या कहता है ? उसने कहा, वह भविष्यद्वक्ता है। परन्तु यहूदियों को विश्वास न हुआ कि यह अन्धा था और अब देखता है, जब तक उन्होंने उसके माता-पिता को, जिसकी आंखें खुल गई थीं, बुलाकर, उनसे न पूछा, कि क्या यह तुम्हारा पुत्र है, जिसे तुम कहते हो कि अन्धा जन्मा था ? फिर अब वह क्योंकर देखता है ? उसके माता-पिता ने उत्तर दिया; हम

तो जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है, और अन्धा जन्मा था। परन्तु हम यह नहीं जानते हैं कि अब क्योंकर देखता है; और न यह जानते हैं, कि किसने उसकी आंखें खोलीं; वह सयाना है; उसी से पूछ लो; वह अपने विषय में आप कह देगा। ये बातें उसके माता-पिता ने इसलिये कहीं क्योंकि वे यहूदियों से डरते थे; क्योंकि यहूदी एका कर चुके थे, कि यदि कोई कहे कि वह मसीह है, तो आराधनालय से निकाला जाए। इसी कारण उसके माता पिता ने कहा, कि वह सयाना है; उसी से पूछ लो। तब उन्होंने उस मनुष्य को जो अन्धा था, दूसरी बार बुलाकर उससे कहा, परमेश्वर की स्तुति कर: हम तो जानते हैं कि वह मनुष्य पापी है। उसने उत्तर दिया: मैं नहीं जानता कि वह पापी है या नहीं: मैं एक बात जानता हूं कि मैं अन्धा था और अब देखता हूं।.....हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त हो, और उसकी इच्छा पर चलता है, तो वह उसकी सुनता है। जगत के आरम्भ से यह कभी सुनने में नहीं आया, कि किसी ने भी जन्म के अन्धे की आंखें खोली हों। यदि यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से न होता, तो कुछ भी नहीं कर सकता। उन्होंने उसको उत्तर दिया कि तू तो बिलकुल पापों में जन्मा है, तू हमें क्या सिखाता है। और उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया।

यीशु ने सुना, कि उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया है; और जब उससे भेंट हुई तो कहा, कि **क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता** है ? उसने उत्तर दिया, कि हे प्रभु; वह कौन है कि मैं उस पर विश्वास करूं ? यीशु ने उससे कहा, तू ने उसे देखा भी है; और जो तेरे साथ बातें कर रहा है वही है। उसने कहा, हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं: और उसे दन्डवत किया। तब यीशु ने कहा, मैं इस जगत में न्याय के लिये आया हूं, ताकि जो नहीं देखते वे देखें, और जो देखते हैं वे अन्धे हो जाएं। जो फ़रीसी उसके साथ थे, उन्होंने ये बातें सुनकर उससे कहा, क्या हम भी अन्धे हैं ? यीशु ने उनसे कहा, यदि तुम अन्धे होते तो पापी न ठहरते परन्तु अब कहते हो, कि हम देखते हैं, इसलिये तुम्हारा पाप बना रहता है" (यूहन्ना ९)।

यहां, इस वर्णन में जिन विशेष बातों को हम देखते हैं, वे इस प्रकार हैं :

प्रभु यीशु ने कहा, कि न तो इस मनुष्य ने, न इसके माता पिता ने, कोई पाप किया कि यह अन्धा जन्मा, परन्तु यह इसलिये हुआ कि परमेश्वर के काम उसमें प्रगट हों, अर्थात्, हम परमेश्वर का भय अपने मनों में रखें, और उसकी शक्ति वा सामर्थ से डर कर अपने आपको उसके सामने नम्र बनाएं रखें। दूसरे, जब प्रभु यीशु ने उस मनुष्य को चंगा किया, तो इस अद्भुत कार्य से परमेश्वर की सामर्थ उसमें प्रगट हुई, और यह इस बात का एक और प्रमाण था, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है ।

दूसरी मुख्य बात जो इस वर्णन में हम देखते हैं, वह यह है, कि यद्यपि यीशु उस मनुष्य को केवल इतना ही कहकर चंगा कर सकता था, कि जा चंगा हो जा, या अब देखने लग, परन्तु इसके विपरीत यीशु ने उसकी आंखों पर मिट्टी लगाकर उसे आज्ञा दी की जा इसे धो ले ! हम सब जानते हैं, कि न तो उस मिट्टी में कोई सामर्थ थी और न ही उस पानी में जिससे उसने अपनी आंखों को धोया, किन्तु तौ भी वह चंगा केवल तभी हुआ जब उसने यीशु की आज्ञा मानी। इसी तरह जब आज यीशु हमसे यह कहता है कि हम उसमें विश्वास करें और अपने पापों की क्षमा के लिये जल में बपतिस्मा लें, तो हमारा उद्धार होगा, तो हमें संदेह नहीं करना चाहिए और न यूं कहना चाहिए कि जल में बपतिस्मा लेने से मेरा उद्धार कैसे होगा। परन्तु हमें यह विश्वास करना चाहिए, कि जब हम यीशु की आज्ञा का पालन करेंगे तो परमेश्वर की सामर्थ से हमारा उद्धार होगा।

तीसरे स्थान पर, हम अपने पाठ से यह सीखते हैं, कि वह मनुष्य निडर और बेझिझक होकर सब लोगों के सामने बड़े हियाव के साथ यह गवाही देता था कि मुझे यीशु ने चंगा कर दिया है। उसने कहा, "मैं एक बात जानता हूं कि मैं अन्धा था और अब देखता हूं।" जब हम यीशु में विश्वास लाकर तथा उसकी आज्ञाओं का पालन करके उससे उद्धार प्राप्त कर लेते हैं, तो यह हमारा कर्त्तव्य बन जाता है, कि हम उसके

सुसमाचार और अपने उद्धार की खुश-खबरी को अन्य लोगों को दें, ताकि उन्हें भी अनन्त जीवन प्राप्त हो। क्या यही कारण नहीं हैं कि मैं आपको यीशु का सुसमाचार सुना रहा हूं ?

अन्तिम बात जो अपने पाठ में हम देखते हैं, वह यह है, कि जब यीशु ने उस मनुष्य से कहा, "कि क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है ?" तो उसने उत्तर दिया, कि हे प्रभु; वह कौन है कि मैं उस पर विश्वास करूं ? यीशु ने उससे कहा, तू ने उसे देखा भी है; और जो तेरे साथ बातें कर रहा है वही है। तो उसने कहा, "हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं: और उसे दन्डवत किया।"

मित्रो, यीशु ने परमेश्वर की इच्छा पूर्ण करने के लिये जगत के सारे लोगों के पापों के कारण अपने आपको बलिदान कर दिया। वह हम सबसे प्रेम करता है, और हमारे उद्धार के लिये उसने अपने प्राण दे दिये। क्या आप उसमें विश्वास लाकर उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करेंगे ? सो मेरी आशा है कि आप इस विषय में अवश्य ही विचार करेंगे। परमेश्वर अपनी इच्छा पर चलने के लिये आपको बुद्धि वा सामर्थ दें।

११

तुम्हारा जीवन है ही क्या ?

मेरे लिये सचमुच में यह बड़े ही सौभाग्य की बात है कि मैं इस प्रकार बार-बार आप लोगों से बातें कर सकता हूं और विशेष रूप से इसलिये कि मैं आपका ध्यान जीवन की उन बड़ी ही गम्भीर बातों के ऊपर दिला सकता हूं, जिनका सामना हम में से हर एक को करना आवश्यक है। मैं आपके सामने यह विशेष प्रश्न रखता हूं, कि आप अपने जीवन के बारे में क्या सोचते हैं ? क्या आपके निकट जीवन का कोई विशेष महत्व है ? कुछ लोग जीवन को एक बड़ा भारी बोझ समझते हैं, वे जीवन में कोई अच्छाई नहीं देखते, और फलस्वरूप अपने जीवन को उपयोगी वा आनन्दमय बनाने के विपरीत वे उसे व्यर्थ में गवां देते हैं। दूसरी ओर, कुछ लोग ऐसे हैं जो अपने जीवन को केवल खाना-पीना वा पहिनना ही समझते हैं। परन्तु, वास्तव में, यह दोनों ही दृष्टि-कोण अनुचित हैं। हम जानते हैं, कि किसी मनुष्य का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता, और जीवन वास्तव में खाने-पीने वा पहिनने से कहीं अधिक बढ़कर है।

यदि हम सचमुच में जीवन के महत्व और उद्देश्य को समझ लें, तो हम उसे एक बोझ या खाना-पीना मात्र समझने के विपरीत, एक बड़ी ही आशीष समझेंगे, हम उसकी सराहना करेंगे, और एक बड़ी ही कीमती वस्तु समझकर हम उसका उपयोग करेंगे। आज मैं आपको बताना

चाहता हूं कि हमें अपने जीवन को क्यों बड़ा ही महत्वपूर्व और महान् समझना चाहिए; क्यों हमें जीवन को एक बोझ समझने के विपरीत, उसे एक आशीष और मूल्यवान वस्तु समझना चाहिए; और क्यों हमें अपने जीवन को खाने-पीने से कहीं अधिक बढ़कर समझना चाहिए।

सबसे पहले, इस संबन्ध में मैं यह बात देखता हूं, मेरा जीवन परमेश्वर की देन है—अर्थात इसे मुझे परमेश्वर ने दिया है! मैं परमेश्वर के वचन में पढ़ता हूं, जब आदि में परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा तो उसने उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया; और आदम जीवता प्राणी बन गया। (उत्पत्ति २:७; प्रेरितो १७:२५)। मैं जानता हूं, और परमेश्वर का वचन मुझे बताता है, कि आदि में परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया (उत्पत्ति १:२७)। और क्योंकि परमेश्वर आत्मा हैं, इस कारण मैं एक आत्मिक प्राणी हूं। जबकि मेरा जीवन मुझे परमेश्वर की ओर से मिला है, और मैं परमेश्वर के स्वरूप वा उसकी समानता पर बनाया गया हूं, तो मेरा जीवन सचमुच में महान है! मुझे अपने जीवन को महत्वपूर्ण समझना चाहिए, और जिस उद्देश्य के लिये परमेश्वर ने उसे मुझे दिया है, उसी के लिये उसका उपयोग करना चाहिए। हमें यह समझना चाहिए, कि हमें अपने जीवन की रक्षा वा रखवाली करनी है; और हमें देखना है कि इसका उपयोग उसी लिये हो सके जिसके लिये परमेश्वर ने इसे हमें दिया है। हमें जीवन में सच्ची सफलता केवल तभी मिल सकती है यदि हम उस उद्देश्य को सामने रखकर जीवन व्यतीत करें जिस के लिये परमेश्वर ने हमें बनाया है।

मैं यह भी देखता हूं कि जीवन में हमारे पास इतना अधिक समय, बल्कि सुअवसर होते हैं, जिन में हम बड़े-बड़े अच्छे काम कर सकते हैं। परन्तु अकसर हम अवसर को बहुमूल्य न समझकर उसे व्यर्थ में खो देते हैं। कभी-कभी हम इतने आलसी बन जाते हैं कि हम अवसर को सामने पड़ा हुआ देखकर भी उस पर कोई ध्यान नहीं देते। यूं तो बाइबल में हम अनेकों लोगों के बारे में पढ़ते हैं, किन्तु प्रभु यीशु के जीवन से एक बड़ी ही खास बात हम यह सीखते हैं, कि उसका जीवन प्रयत्नशील

और परमेश्वर के कामों में लगे रहने वाला जीवन था। उस समय भी जबकि वह केवल बारह वर्ष का ही था, उसने यह कहकर अपनी माता को चकित कर दिया, कि मुझे अपने परमेश्वर पिता के कामों में लगा रहना आवश्यक है (लूका २:४९)। एक बार जब उसके चेले उस से भोजन खाने का आग्रह कर रहे थे, तो यीशु ने उनसे कहा, "मेरा भोजन यह है, कि अपने भेजने वाले की इच्छा के अनुसार चलूं और उसका काम पूरा करूं" (यूहन्ना ४:३४)। वह हर समय अवसर की खोज में रहता था, और उसने अपने छोटे से जीवन में ही इतने बड़े-बड़े काम किए जिनके कारण उस का प्रभाव संसार पर हमेशा तक बना रहेगा। परन्तु दूसरी ओर, हम बाइबल में एक और मनुष्य के बारे में पढ़ते हैं, उस का नाम मतूशेलह था। जबकि यीशु इस पृथ्वी पर कुल तेंतीस वर्ष तक ही रहा, मतूशेलह के बारे में हम पढ़ते हैं कि वह पृथ्वी पर नौ-सौ-उनहत्तर वर्ष तक रहा। परन्तु इतनी लम्बी अवस्था में मतूशेलह ने क्या-क्या किया? इस विषय में कुछ भी नहीं लिखा गया—क्योंकि वास्तव में मतूशेलह ने ऐसा कोई भी काम नहीं किया जिस के कारण उसे स्मरण किया जाए। उसके बारे में बाइबल में हम केवल इतना ही पढ़ते हैं कि "मतूशेलह की कुल अवस्था नौ-सौ-उनहत्तर वर्ष की हुई: तत्पश्चात वह मर गया" (उत्पत्ति ५:२७)। सो यहां से हम सीखते हैं, कि जबकि यीशु ने अपने जीवन को बहूमूल्य जानकर उसे परमेश्वर और मनुष्यों की सेवा में लगाया, और अपने जीवन में आने वाले प्रत्येक अवसर का लाभ उठाया, परन्तु मतूशेलह ने इतना लम्बा जीवन प्राप्त करने के बाद भी उसका मूल्य न जाना—वह केवल मर गया। परन्तु, इस सम्बन्ध में, आप किस का अनुसरण कर रहे हैं? यीशु मसीह का, या मतूशेलह का? मैं आपसे कहना चाहता हूं, कि आप चाहे किसी भी तरह की परिस्थिति में क्यों न हों, आप के पास बड़े अच्छे-अच्छे अवसर हैं—यदि आप अपनी आंखों को उठाकर और खोलकर देखने का प्रयत्न करें, तो वे आप से दूर नहीं हैं। आप वास्तव में बहुत कुछ कर सकते हैं, और सबसे पहिले एक बड़ा ही आवश्यक काम आप यह कर सकते हैं कि आप यीशु मसीह के सुसमाचार की आज्ञाओं का पालन करके अपनी आत्मा

को नाश होने से बचा सकते हैं।

आप के लिये सचमुच में यह एक बड़ा ही अच्छा सुअवसर है, जबकि आप यीशु के इस सुसमाचार को सुन रहे हैं, कि उसने आपको बचाने के लिये अपनी जान दी। और वास्तव में आपके पास यह एक बड़ा ही अच्छा अवसर है, जबकि आप यीशु में विश्वास लाकर और अपने पापों से मन फिरा कर, यीशु की आज्ञानुसार अपने पापों की क्षमा के लिये उस में बपतिस्मा ले सकते हैं। क्या जाने यह अवसर आप को फिर कभी प्राप्त हो या न हो! किसी ने कहा है, कि चार वस्तुएं कभी वापस लौटकर नहीं आतीं, अर्थात्, बोला हुआ वचन, छोड़ा हुआ तीर, बीता हुआ समय, और खोया हुआ अवसर। मित्रो, यह समय आपके लिये वास्तव में बड़ा ही बहूमूल्य है, और आप के जीवन में यह समय दोबारा कभी लौटकर नहीं आएगा। इसलिये, इस जीवन में, और अभी, आपको यह निश्चय करना है, कि क्या आप प्रभु यीशु की इच्छा पर चलकर अपने प्राणों को बचाना चाहते है, या आप अपनी इच्छा अनुसार चलकर अपने प्राणों को खोना चाहते है? प्रभु यीशु ने कहा, "क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? और मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा?" (मरकुस ८:३५-३७)।

मित्रो, मनुष्य का जीवन बड़ा ही कीमती है, और मैं चाहता हूं कि आप इस ओर भी ध्यान दें, कि मनुष्य का जीवन बड़ा ही अनिश्चित है। हज़ारों वर्ष पूर्व पवित्र शास्त्र के एक लेखक ने इस विषय में यूं कहा था, "मनुष्य जो स्त्री से उत्पन्न होता है, वह थोड़े दिनों का और दुख से भरा रहता है। वह फूल की नाईं खिलता, फिर तोड़ा जाता है; वह छाया की रीति पर ढल जाता, और कहीं ठहरता नहीं!" (अय्यूब १४:१,२)। एक अन्य लेखक यूं कहता है: "हमारी आयु के वर्ष सत्तर तो होते हैं, और चाहे बल के कारण अस्सी वर्ष भी हो जाएं, तौ भी उन का घमन्ड केवल कष्ट और शोक ही शोक है; क्योंकि वह जल्द कट

जाती है, और हम जाते रहते है।" इसलिये वह आगे कहता है, कि हे परमेश्वर "हम को अपने दिन गिनने की समझ दे कि हम बुद्धिमान हो जाएं" (भजन संहिता ९०:१०,१२)। मित्रो, काश हमारी भी यही प्रार्थना हो।

अब, जब कि आप इन बातों के ऊपर विचार करते हैं, मैं आप से आज्ञा चाहूंगा। परमेश्वर अपने मार्ग पर चलने के लिये आपको सामर्थ दे।

१२

परिवर्तन

एक बार फिर से आपके सम्मुख उपस्थित होकर आपके साथ बातें करने के इस अवसर को प्राप्त करके मुझे बड़ी ही खुशी का अनुभव हो रहा है। मैं आप सब लोगों के उन पत्रों के लिये भी आपको धन्यवाद देना चाहता हूं, जो आपने पिछले दिनों में सत्य सुसमाचार कार्यक्रम की प्रशंसा में लिखे। वास्तव में इस प्रकार के पत्रों से हमें बड़ा ही उत्साह वा आनन्द मिलता है। मैं यह बात भी आपको फिर से एक बार बता देना चाहता हूं कि सत्य-सुसमाचार कार्यक्रम का उद्देश्य किसी भी प्रकार से लोगों का मनोरंजन करने का कदापि नहीं है। इस कार्यक्रम के द्वारा हमारा एकमात्र उद्देश्य यह है, कि आप परमेश्वर के उस प्रेम को जानें जिसे उसने आपसे और जगत के सारे लोगों से रखा, और अपने सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर के प्रति अपने कर्त्तव्य को समझें। मेरी आशा है कि इसी दृष्टिकोण से आप सब सुसमाचार के इस कार्यक्रम को भविष्य में सुनते रहेंगे। यदि आप ऐसा करेंगे तो आपको वह शान्ति, और वह प्रसन्नता, और वह आशा मिलेगी जो यह संसार कदापि किसी मनुष्य को नहीं दे सकता, और जो मनुष्यों की समझ से परे है।

आज मैं आपसे परिवर्तन के बारे में कुछ कहने जा रहा हूं। परिवर्तन, अर्थात् बदलाव, कभी-कभी इतना अधिक आवश्यक और महत्त्वपूर्ण हो जाता है, कि यदि हम अपनी इच्छा या किसी निश्चय में तुरंत

परिवर्तन न करें तो वह हमारे लिये बड़ा ही हानिकारक, और यहां तक कि प्राणघातक, सिद्ध हो सकता है। मान लीजिए, घर में लगे तख्ते पर रखी बोतलों के ढेर में से आप एक बोतल उठाकर उसमें से कुछ दवाई निकालकर एक बीमार व्यक्ति को देने लगते हैं, कि एकाएक आपका ध्यान इस बात के ऊपर दिलाया जाता है, कि उस बोतल के ऊपर गलत लेबल लगा हुआ है, और उसमें वास्तव में दवाई नहीं, परन्तु एक हानिकारक पदार्थ है। तो आप क्या करेंगे ? निश्चय ही आप उस बोतल को एकदम वापस रख देंगे।

अभी कुछ ही दिन हुए जबकि मैं एक अपरिचित स्थान पर कुछ लोगों से मिलने के लिये गया। वहां से लौटते समय काफ़ी अन्धेरा हो गया था, और मुझे इस बात का आभास ही न हुआ कि जिस सड़क पर मैं जा रहा था वह मुझे मेरे घर से बहुत दूर ले जा रही थी। जब मुझे कुछ संदेह सा होने लगा तो मैंने रुक कर एक व्यक्ति से पूछा कि यह सड़क कहां जा रही है; उन्होंने जवाब में मुझ से आनना चाहा, कि मैंने कहां जाना है, और जब मैंने उन्हें बताया, तो उन्होंने एक दूसरे मार्ग की ओर संकेत करके मुझ से कहा कि मैं इस सड़क से जाऊं, सो मैंने तुरन्त अपना रास्ता बदल लिया और उस मार्ग पर हो लिया, जो मुझे उस सज्जन व्यक्ति ने बताया था।

किन्तु इस प्रकार का धोखा लगभग हम सभी के साथ कभी-न-कभी हो जाता है। परन्तु जैसे ही हमें इस बात का पता चलता है कि हम गलत मार्ग पर चल रहे हैं, तो हम एकदम अपनी इच्छा बदलकर सही मार्ग पर चलने लगते हैं। जैसे कि मान लीजिए, आपको पता चलता है कि आपका दूधवाला आपको प्रतिदिन पानी मिलाकर दूध बेचता है, तो आप निश्चय ही अपना दूधवाला तुरंत बदल देंगे।

वैज्ञानिक खोजों के इस काल में हमारा परिचय कई एक नई और अजीब बीमारियों के साथ हो रहा है। परन्तु मान लीजिए, कि आपकी जांच करने के बाद यदि डॉक्टर आपसे कहे कि यदि आप अपने खाने-पीने की वस्तुओं में शीघ्र ही कुछ आवश्यक बदलाव नहीं लाएंगे तो आपका रोग गम्भीर और घातक बन सकता है। तो आप क्या करेंगे ?

क्या आप डॉक्टर की बात को मज़ाक समझकर टाल देंगे ? क्या आप उसको हंसी में उड़ा देंगे ? क्या आप उस पर पूरी गम्भीरता के साथ ध्यान न देंगे और उस पर अमल न करेंगे ?

अभी कुछ ही समय हुआ जबकि हम सबने समाचारों में सुना कि ईरान में एक सिनेमाघर में आग लग जाने से सैकड़ों लोगों की मृत्यु हो गई। आप क्या सोचते हैं, क्या वे लोग यूं ही अपनी कुर्सियों पर बैठे-बैठे जलकर मर गए ? जी नहीं ! परन्तु जैसे ही उन्हें आग लग जाने के विषय में पता चला होगा वे एकदम अपनी-अपनी कुर्सियों को छोड़कर उठे होंगे, उन्होंने अपने ध्यानों को सिनेमा के पर्दे पर से हटाकर पूरे प्रयत्न से उस द्वार की खोज की होगी जिससे वे बाहर निकल आएं।

जब कभी भी हमारे सामने जीने और मरने का प्रश्न आता है, जब कभी भी हमें अपने प्राणों का भय लगता है, तो हम सब कुछ छोड़कर अपने प्राणों को बचाने का प्रयत्न करते हैं। हम उसी मार्ग पर नहीं रहते जिस पर हम थे; हम उसी स्थान पर नहीं रहते जिस पर हम थे। हम अपना मार्ग बदल देते हैं, अपना स्थान बदल देते हैं, और अपने विचार बदल देते हैं, क्योंकि हम अपने जीवन से प्रेम करते है, हम उसे खोना नहीं चाहते, हम उसे बचाना चाहते हैं।

परन्तु क्या हम अपनी आत्मा के महत्व को नहीं पहचानते ? क्या हम अपनी आत्मा से प्रेम नहीं रखते ? क्या हम अपनी आत्मा को नहीं बचाना चाहते ? सो आईए, आज हम अपने आप से यह प्रश्न पूछे, "कि आज मैं आत्मिक दृष्टिकोण से कहां हूं ?" क्या मैं सही मार्ग पर चल रहा हूं या मैं एक गलत मार्ग पर चल रहा हूं ? क्या मुझे बदलने की आवश्यकता है ?

जब हम आत्मिक बदलाव के विषय में विचार करते हैं तो अकसर धार्मिक किस्म के कुछ लोग ऐसा सोचते हैं, कि बदलने की आवश्यकता केवल अधर्मियों वा पापियों को ही है। यह विचार बिलकुल अनुचित है। वास्तव में उन्हें भी परिवर्तन की आवश्कता उतनी ही अधिक है जितनी कि अधर्मियों को है। धार्मिक दृष्टकोण से किसी भी एक मार्ग पर हो लेना इस बात का प्रमाण नहीं है कि आप वास्तव में सही

मार्ग पर चल रहे हैं। परन्तु सच्चाई यह है, कि एक ही परमेश्वर है और उसका एक ही मार्ग और एक ही इच्छा है, इसलिये हम उसके पास दर्जनों और सैकड़ों भिन्न-भिन्न मार्गों पर चलकर नहीं पहुंच सकते। हमारा कर्त्तव्य यह है कि हम सब परमेश्वर के उस एकमात्र मार्ग को ढूंढ़ें जिस पर चलकर हम वास्तव में अनन्त जीवन और स्वर्ग में प्रवेश कर सकते हैं। और जब वह मार्ग हमें मिल जाए तो सब कुछ छोड़कर पूरे मन से हम उसके पीछे हो लें।

बाइबल के पृष्ठों से बदलाव से सम्बन्धित इस प्रकार के दो बड़े ही अच्छे उदाहरण हमें मिलते हैं। विशेष बात यह है, कि ये दोनों ही व्यक्ति बड़े ही धार्मिक व्यक्ति थे। सबसे पहिले हम शाऊल नाम के एक व्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं। शाऊल एक बड़ा ही पढ़ा-लिखा, बुद्धिमान पुरुष था। वह एक कट्टर यहूदी और फरीसी था। वह अपने धर्म के विषय में इतना अधिक जोशीला था, कि जब उसने देखा कि एक बड़ी संख्या में लोग यीशु मसीह का अनुसरण करने लगे हैं तो वह उन्हें सताने और मरवाने लगा। इसी धुन में जब वह एक दिन यरूशलेम से दमिश्क की ओर जा रहा था कि "एकाएक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी। और वह भूमि पर गिर पड़ा और यह शब्द सुना, कि हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है? उसने पूछा, हे प्रभु तू कौन है? उस ने कहा; मैं यीशु हूं; जिसे तू सताता है। परन्तु अब उठकर नगर में जा और जो तुझे करना है, वह तुझ से कहा जाएगा" (प्रेरितों ९:६-३)। जब शाऊल प्रभु की आज्ञानुसार नगर के भीतर प्रतीक्षा कर रहा था, तो प्रभु की आज्ञा पाकर हनन्याह नाम का एक प्रचारक उसके पास आया, और उसने शाऊल को प्रभु का वचन सुनाया, और उस से कहा, "अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल" (प्रेरितों २२:१६)। हम पढ़ते हैं, कि शाऊल ने तुरन्त उठकर बपतिस्मा लिया और इस प्रकार वह स्वयं भी प्रभु का एक चेला बन गया (प्रेरितों ९:१८)।

इसी सम्बन्ध में एक दूसरा उदाहरण जो हम देखते हैं वह एक खोजे

का हैं, जो अपने देश से लगभग एक हज़ार मील की यात्रा करके यरूशलेम में अपने धर्म के अनुसार उपासना करने आया था। जब वह वापस अपने देश को लौट रहा था तो अपने रथ में बैठकर वह बाइबल की एक पुस्तक को पढ़ रहा था। यहां से हम देखते हैं कि वह मनुष्य कितना अधिक धार्मिक था, अर्थात, वह एक हज़ार मील की यात्रा करके अराधना करने आया था, और अब जबकि वह वापस लौट रहा था तो वह उस समय भी एक धार्मिक पुस्तक पढ़ता जा रहा था। किन्तु मार्ग में खोजे की भेंट एक ऐसे मनुष्य से होती है जो सुसमाचार का प्रचारक होता है, उस मनुष्य का नाम फिलिप्पुस था। जब फिलिप्पुस ने खोजे से पूछा, कि क्या वह उन बातों को समझता भी है जिन्हें वह पढ़ रहा है? तो खोजे ने उस से कहा कि नहीं, परन्तु यदि तू जानता है तो मुझे बता। इस पर लिखा है, कि फिलिप्पुस ने उसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया। सो लिखा है, जब "मार्ग में चलते-चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे, तब खोजे ने कहा, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक हैं? फिलिप्पुस ने कहा. यदि तू सारे मन से विश्वास करता हैं तो हो सकता है। उस ने उत्तर दिया, मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। तब उस ने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनो जल में उतर पड़े, और उस ने उसे बपतिस्मा दिया" (प्रेरितों ८:३५-३८)।

सो इस प्रकार हम देखते हैं, कि शाऊल और खोजे ने परमेश्वर के मार्ग को जान लेने के बाद अपने-अपने मार्ग को छोड़कर उसी एक मात्र मार्ग को अपनाया जो परमेश्वर का मार्ग है। क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता" (यूहन्ना १४:६)।

परन्तु आप आज कहां हैं? क्या आप उस मार्ग पर चल रहे हैं जो परमेश्वर का है? क्या आप उस मार्ग पर चल रहे हैं जो परमेश्वर ने हमें दिया है? यदि नहीं, तो आपको निश्चय ही बदलने की आवश्यकता है।

मेरा विश्वास है कि आप इस विषय में अवश्य ही विचार करेंगे।

१३

नूह का उद्धार तथा हमारा उद्धार

क्या कभी आपने ऐसा सोचा है, कि क्यों संसार में सबसे अधिक लोग बाइबल को ही पढ़ते हैं ? क्यों इस पुस्तक की मांग संसार की प्रत्येक भाषाओं में दिन-प्रति-दिन बढ़ती ही जा रही है ? क्यों संसार में अन्य सभी पुस्तकों के अतिरिक्त इसी पुस्तक को प्रत्येक वर्ष सबसे अधिक छापा जाता है ? और क्यों लाखों लोग इस पुस्तक में विश्वास करते हैं और इसमें लिखी शिक्षाओं का प्रचार करते हैं ? यह मैं आपको कोई अनुमान नहीं बता रहा हूं, परन्तु यह एक सच्चाई है। क़िन्तु प्रश्न यह है, कि ऐसा क्यों है ? एक बड़ा ही विशेष और मुख्य कारण इस बात का यह है, कि वर्षों की जांच-पड़ताल और वैज्ञानिक खोजों के बाद अनेकों ऐसे प्रमाण हमारे सामने आए है जिन्होंने एक बार और हमेशा के लिये इस बात को साबित कर दिया है कि बाइबल में लिखी बातें और विवरण वास्तव में सच हैं।

यूं तो इस समय इस प्रकार के अनेकों प्रमाणों के उदाहरण यहां दिये जा सकते हैं, परन्तु क्योंकि आज हम अपने पाठ में नूह के बारे में देखने जा रहे हैं, इसलिये, इस समय, इस सम्बन्ध में, सबसे अच्छा उदाहरण विशेष रूप से नूह के समय के उस जल-प्रलय का दिया जा सकता है जिसका वर्णन हमें बाइबल में उत्पत्ति की पुस्तक में मिलता है। इस सम्बन्ध में हम देखते हैं, कि आज से हज़ारों वर्ष पूर्व जब परमेश्वर ने

देखा, कि पृथ्वी पर मनुष्यों में बुराई वा अधार्मिकता बहुत अधिक बढ़ गई है, और यहां तक कि उनके मन में जो कुछ भी उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता है, तो परमेश्वर ने पृथ्वी पर से मनुष्यों को मिटा डालने का निश्चय किया। किन्तु इससे पहिले कि परमेश्वर उस भयानक जल-प्रलय को पृथ्वी पर भेजता जिस से पृथ्वी पर प्रत्येक प्राणी का अन्त होने जा रहा था, लिखा है, पृथ्वी पर परमेश्वर ने केवल एक ही व्यक्ति को धर्मी पाया, उस मनुष्य का नाम नूह था। सो परमेश्वर ने नूह को एक विशेष प्रकार का जहाज़ बनाने की आज्ञा दी। नूह ने परमेश्वर की आज्ञानुसार उस विशाल नाव को तैयार किया, जिसकी लम्बाई तीन सौ हाथ, और चौड़ाई पचास हाथ, और ऊंचाई तीस हाथ की थी। तद्पश्चात, परमेश्वर की इच्छा अनुसार, पृथ्वी पर एक भारी जल प्रलय का आरम्भ हुआ। लिखा है, गहिरे समुद्र के सब सोते फूट निकले और आकाश के झरोखे खुल गए और वर्षा चालीस दिन और चालीस रात तक निरन्तर होती रही। बाइबल बताती है, कि इस जल प्रलय का प्रभाव इतना विशाल था कि धरती पर जितने भी बड़े-बड़े पहाड़ थे सब डूब गए; और जल पृथ्वी पर एक सौ पचास दिन तक प्रबल रहा। परन्तु परमेश्वर की इच्छानुसार नूह का जहाज़ जल के ऊपर उठता और तैरता रहा, और अन्त में नूह का विशाल जहाज़ अरारात नाम एक पहाड़ के ऊपर जा टिका। और यूं धर्मी नूह और उसका सारा परिवार और जितने भी जीव-जन्तु इत्यादि परमेश्वर की इच्छानुसार उस जहाज़ के भीतर गए थे, उस भयंकर जल-प्रलय से बच गए।

इस जल-प्रलय के अनेकों ऐसे प्रमाण आज हमारे सामने उपस्थित हैं जिनका इन्कार करना स्वयं अपने ही अस्तित्व का इन्कार करने जैसा है। उदाहरण स्वरूप, न केवल जल-जन्तुओं के अस्थिपंजर इत्यादि ही बड़े-बड़े पहाड़ों के ऊपर पाए गए हैं, जो इस बात का प्रमाण है कि किसी समय जल का स्तर उन पहाड़ों के ऊपर तक पहुंच गया था, परन्तु कुछ पर्वतारोही तो अरारात पर्वत के ऊपर से लकड़ियों के कुछ ऐसे टुकड़े भी नीचे लेकर आए हैं जिनके बारे में विश्वास किया जाता है कि लकड़ियों के वे टुकड़े नूह के जहाज़ के हैं, और यह विश्वास व्यर्थ की बातों के ऊपर

नहीं, परन्तु उस लकड़ी की ठीक तरह से जांच-पड़ताल करने के बाद कुछ ठोस प्रमाणों के ऊपर आधारित है। इसके अतिरिक्त, कुछ अन्य वैज्ञानिक तथ्य भी इस जल-प्रलय की पुष्टि करते हैं।

परन्तु आज मैं विशेष रूप से जिस बात के ऊपर आप का ध्यान दिलाना चाहता हूं वह यह है, कि मुख्य रूप से जिन बातों के आधार पर उस समय जल-प्रलय से नूह का उद्धार हुआ, उसी तरह आज हम सबका भी हमारे पापों से उद्धार होता है।

इस बारे में सबसे पहिली बात हम यह देखते हैं, कि नूह का उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह से हुआ। लिखा है, कि जब परमेश्वर ने मनुष्यों को जल-प्रलय से नाश करने का निश्चय किया तो परमेश्वर के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही (उत्पत्ति ६:८)। प्रभु यीशु के नए नियम में आज अपने उद्धार के सम्बन्ध में एक जगह हम यूं पढते हैं, "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमन्ड करे" (इफिसियों ३:८,९)। परमेश्वर ने अपना अनुग्रह अपने पुत्र यीशु मसीह को इस संसार में हमारे पापों के कारण मरने के लिये भेजकर आज हम सब पर प्रगट किया है। इसलिये बाइबल में हम एक अन्य जगह यूं पढ़ते हैं, "क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है" (रोमियों ६:२३)।

इस सम्बन्ध में, दूसरी आवश्यक बात हम यह देखते हैं, कि नूह ने परमेश्वर पर विश्वास किया। पवित्र शास्त्र कहता है, "विश्वास ही से नूह ने उन बातों के विषय में जो उस समय दिखाई न पड़ती थीं, चितौनी पाकर भक्ति के साथ अपने घराने के बचाव के लिये जहाज़ बनाया, और उसके द्वारा उस ने संसार को दोषी ठहराया; और उस धर्म का वारिस हुआ, जो विश्वास से होता है" (इब्रानियों ११:७)। इस में कोई संदेह नहीं, कि आज भी यदि कोई उद्धार पाना चाहता है तो उसे चाहिए कि वह परमेश्वर में विश्वास करे। परमेश्वर का वचन कहता है कि "विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है।"

(इब्रानियों ११:६)।

परन्तु नूह ने केवल परमेश्वर पर विश्वास ही नहीं किया, किन्तु उस ने उसकी आज्ञा मानकर उस जहाज़ को भी बनाया। यहां से हम देखते हैं कि नूह आज के उन लोगों की तरह नहीं था जो कहते हैं, यदि हम परमेश्वर पर विश्वास रखें, या मानसिक रूप से यीशु को अपने मन में अपना उद्धारकर्त्ता मान लें, तो हमारा उद्धार हो जाएगा। यद्यपि नूह परमेश्वर पर विश्वास रखता था, और वह जानता था कि परमेश्वर उसे बचाना चाहता है, किन्तु तौ भी वह निश्चित रूप से जानता था कि यदि उसे बचना है, तो उसे अवश्य ही उस जहाज़ को बनाना है जिसे बनाने की आज्ञा उसे परमेश्वर ने दी थी। फिर, उस ने उसे ठीक वैसे ही बनाया। एक बार जब प्रभु यीशु लोगों को स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने के सम्बन्ध में उपदेश दे रहा था, तो उस ने कहा, "जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है" (मत्ती ७:२१) सो मित्रो, हमारा उद्धार केवल विश्वास ही से नहीं हो सकता, परन्तु अवश्य है कि उद्धार पाने के लिये हम परमेश्वर की प्रत्येक उस आज्ञा का पालन करें जो उस ने अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा हमें दी है। इसलिये, जबकि प्रभु यीशु ने कहा, कि विश्वास के अतिरिक्त, उद्धार पाने के लिये, प्रत्येक मनुष्य को अपना मन फिराना चाहिए और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेना चाहिए, तो हमें उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिए।

चौथी और अन्तिम बात, जो हम नूह और अपने उद्धार के सम्बन्ध में समान रूप से देखते हैं वह यह है, जिस प्रकार नूह पानी के द्वारा बचा, उसी प्रकार आज हम भी पानी के भीतर बपतिस्मा लेकर अपने पापों से उद्धार पाते हैं। पवित्र बाइबल में इस विषय पर एक जगह हम यूं पढ़ते हैं, "जिन्होंने उस बीते समय में आज्ञा न मानी जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा रहा, और वह जहाज़ बन रहा था, जिस में बैठकर थोड़े लोग अर्थात आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए। और उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात बपतिस्मा, यीशु

मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; (उस से शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)" (१ पतरस ३:२०, २१)। इस तरह हम देखते हैं कि जिस प्रकार नूह पानी के द्वारा बचा, वैसे ही आज हम भी, पानी के ही द्वारा, अर्थात बपतिस्मा लेकर अपने पापों से उद्धार पाते हैं। बपतिस्मा कोई स्नान नहीं है, जिसे शरीर की मैल को दूर करने के लिये लिया जाता है। परन्तु बपतिस्मा आज हमारे लिये परमेश्वर की वैसे ही एक आज्ञा है, जिस प्रकार जहाज़ तैयार करना नूह के लिये परमेश्वर की एक आज्ञा थी। परमेश्वर की इस आज्ञा का हमें सच्चाई, ईमानदारी और शुद्ध विवेक से पालन करना चाहिए। बपतिस्मा प्रभु यीशु के सुसमाचार का प्रतिरूप है, अर्थात जिस प्रकार यीशु मेरे पापों के कारण मारा गया और गाड़ा गया और फिर जी उठा, वैसे ही जब मैं अपने अपराधों के लिये मर गया, और बपतिस्मा के द्वारा जल के भीतर गाड़ा गया, और उस में से बाहर आया, तो मैं नए जीवन की चाल चलने के लिये एक नया मनुष्य बन गया (रोमियों ६:३-६)।

मेरी आशा है कि आप इन सभी बातों पर विचार करेंगे, और यदि इन बातों के बारे में आप कुछ और जानना चाहें, तो पत्र-व्यवहार के लिये हमारा पता नोट कर लें।

१४

लूत की पत्नी को स्मरण रखो !

प्राचीन काल में इब्राहीम के दिनों में सदोम और अमोरा नाम के दो नगर थे। ये नगर देखने में इतने अच्छे थे कि जब एक बार इब्राहीम और उसके भतीजे लूत के बीच ऐसी परिस्थिति आ खड़ी हुई जिसके कारण उन्हें अपने-अपने परिवारों को लेकर अलग होना पड़ा; और जब इब्राहीम ने अपनी भलाई का परिचय देते हुए लूत से कहा, "क्या सारा देश तेरे सामने नहीं ? सो मुझ से अलग हो, यदि तू बाईं ओर जाएगा तो मैं दहिनी ओर जाऊंगा; और यदि तू दहिनी ओर जाएं, तो मैं बाईं ओर जाऊंगा।" लिखा है, कि लूत ने अपनी आंख उठाकर यरदन नदी के पास वाली सारी तराई को देखा, जहां सदोम और अमोरा बसे हुए थे, और उसने पाया कि वह जगह सिंची हुई है और बड़ी ही उपजाऊ है, सो उसने अपने सारे परिवार समेत वहीं रहने का निश्चय कर लिया। परन्तु वचन हमें आगे बताता है, कि सदोम के लोग परमेश्वर के लेखे में बड़े ही दुष्ट और पापी थे (उत्पत्ति १३:१३)। फिर एक समय आया जबकि उन लोगों का अधर्म इतना अधिक बढ़ गया कि परमेश्वर ने उन नगरों को नाश करने के लिये अपने दो दूत वहां भेजे। किन्तु लूत उन सब लोगों की तरह दुष्ट नहीं था, इसलिये उन दूतों ने लूत से कहा, कि तू अपने परिवार के सारे लोगों को लेकर यहां से निकल जा क्योंकि अधर्म के कारण हम यह स्थान नाश करने पर हैं। इस घटना का वर्णन

हम बाइबल में उत्पत्ति नामक पुस्तक के उन्नीसवें अध्याय में इन शब्दों में पढ़ते हैं :

"जब पह फटने लगी, तब दूतों ने लूत से फुर्ती कराई और कहा, कि उठ, अपनी पत्नी और दोनों बेटियों को जो यहां हैं ले जा : नहीं तो तू भी इस नगर के अधर्म में भस्म हो जाएगा। पर वह विलम्ब करता रहा, इससे उन पुरुषों ने उसका और उसकी पत्नी, और दोनों बेटियों का हाथ पकड़ लिया; क्योंकि यहोवा की दया उस पर थी : और उसको निकाल कर नगर के बाहर कर दिया। और ऐसा हुआ कि जब उन्होंने उनको बाहर निकाला, तब उसने कहा, अपना प्राण लेकर भाग जा; पीछे की ओर न ताकना और तराई भर में न ठहरना; उस पहाड़ पर भाग जाना, नहीं तो तू भी भस्म हो जाएगा। लूत ने उन से कहा, हे प्रभु ऐसा न कर : देख, तेरे दास पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि हुई है, और तू ने इस में बड़ी कृपा दिखाई, कि मेरे प्राण को बचाया है; पर मैं पहाड़ पर भाग नहीं सकता, कहीं ऐसा न हो, कि कोई विपत्ति मुझ पर आ पड़े, और मैं मर जाऊं : देख, वह नगर ऐसा निकट है कि मैं वहां भाग सकता हूं, और वह छोटा भी है : मुझे वहीं भाग जाने दे, क्या वह छोटा नहीं है ? और मेरा प्राण बच जाएगा। उस ने उस से कहा, देख मैं ने इस विषय में तेरी बिनती अंगीकार की है, कि जिस नगर की चर्चा तू ने की है, उसको मैं नाश न करूंगा। फुर्ती से वहां भाग जा; क्योंकि जब तक तू वहां न पहुंचे तब तक मैं कुछ न कर सकूंगा। इसी कारण उस नगर का नाम सोअर (अर्थात् छोटा) पड़ा। लूत के सोअर के निकट पहुंचते ही सूर्य पृथ्वी पर उदय हुआ। तब यहोवा ने अपनी ओर से सदोम और अमोरा पर आकाश से गन्धक और आग बरसाई; और उन नगरों को और उस सम्पूर्ण तराई को, और नगरों के सब निवासियों को भूमि की सारी उपज समेत नाश कर दिया।"

परन्तु जिस समय सदोम और अमोरा का नाश हो रहा था, उसी समय एक और बड़ी ही अप्रिय घटना घटी। लिखा है, कि जाते-जाते, "लूत की पत्नी ने, जो उसके पीछे थी, दृष्टि फेर के पीछे की ओर देखा, और वह नमक का खम्भा बन गई।" लूत की पत्नी को शायद विश्वास

न हुआ होगा, कि परमेश्वर अवश्य ही उन नगरों को नाश करेगा, सो उसने पीछे फिरकर देखा। शायद उसे अपने घर को छोड़ने का बहुत दुख था; कदाचित उसे अपने घर में रखी उन वस्तुओं का ध्यान आया होगा, जिनसे वह बड़ा ही प्रेम करती थी, सो उसने पीछे फिर क़र देखा। परन्तु वह नमक का खम्भा बन गई, क्योंकि प्रभु ने उन्हें यह आज्ञा दी थी कि तुम पीछे मुड़कर न देखना।

इस घटना के सैकड़ों वर्ष बाद, एक बार जब प्रभु यीशु अपने चेलों को इस विषय में बता रहा था, कि किस प्रकार एकाएक वह जगत का न्याय करने के लिये एक दिन वापस आएगा, तो उस ने नूह और लूत के दिनों का उदाहरण देकर उन से कहा, कि जिस तरह नूह के दिनों में सब लोग, आनेवाली विपत्ति से बेखबर होकर, अपनी-अपनी खुशियों और कामों में लीन थे, जब जल-प्रलय ने आकर उन सब को नाश किया, और जैसा लूत के दिनों में हुआ था, कि लोग खाते-पीते, लेन-देन करते, और प्रति-दिन की तरह अपने-अपने कामों में व्यस्त थे। परन्तु जिस दिन लूत सदोम से निकला, उस दिन आग और गन्धक आकाश से बरसी और सब को नाश कर दिया। प्रभु ने कहा, उसी प्रकार न्याय के दिन मेरा आना भी होगा। फिर उसने यह आदेश दिया, कि "लूत की पत्नी को स्मरण रखो।" (लूका १७:३२)।

परन्तु क्यों ? क्या आवश्यकता है हमें लूत की पत्नी को स्मरण रखने की ?

सबसे पहिले तो हमें लूत की पत्नी को इसलिये स्मरण रखना चाहिए, कि उसने संदेह किया, उसने प्रभु की बात पर विश्वास न किया। कितनी ही बार क्या हम भी लूत की पत्नी की तरह प्रभु की बातों पर संदेह नहीं करते ? क्यों हम ऐसा सोचते हैं, कि प्रभु तो बड़ा ही प्रेमी है, इसलिये वह किसी को भी नाश न करेगा, जबकि प्रभु का वचन हम से कहता है, कि न्याय के दिन सारे अधर्मी अनन्त दन्ड भोगेंगे और धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे ? (मत्ती २५:४६)। क्यों हम ऐसा सोचते हैं, कि यदि हम यीशु में विश्वास रखते हैं तो चाहे हम बपतिस्मा न भी लें तौ भी वह हमारा उद्धार करेगा, जबकि वह आज्ञा देकर कहता

है कि जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा ? (मरकुस १६:१६) । और क्यों हम में से अनेकों लोग प्रभु के फिर से प्रगट होने और न्याय और स्वर्ग और नरक इत्यादि के बारे में संदेह करते हैं, जबकि परमेश्वर अपने वचन में हम सब को स्पष्टता से बताता है, कि प्रभु एक दिन अवश्य ही स्वर्ग से प्रगट होगा; उस दिन सब जी उठेंगे; और वह जीवते और मरे हुओं का न्याय करेगा; और धर्मी को अपने धर्म का और अधर्मी को अपने अधर्म का फल मिलेगा ? हमें लूत की पत्नी को स्मरण रखना चाहिए, कि हम उसकी नाईं संदेह और अविश्वास न करें।

दूसरे, हमें लूत की पत्नी को इसलिये स्मरण रखना चाहिए, क्योंकि उसने प्रभु की आज्ञा का पालन नहीं किया। उसे कहा गया था कि पीछे मुड़कर न देखना, परन्तु उसने पीछे मुड़कर देखा। सो हम देखते हैं, कि उसने प्रभु की आज्ञा का स्पष्ट विरोध किया। क्या ऐसा उसने इसलिये किया कि उसे प्रभु की आज्ञा बड़ी ही छोटी और व्यर्थ प्रतीत हुई ? क्या प्रभु की कोई भी आज्ञा छोटी या व्यर्थ है ? प्रभु ने उन से कहा था, कि यहां से निकलो, भागो, और जाओ, और पीछे फिरकर न ताकना। लूत की पत्नी, प्रभु की आज्ञा अनुसार, अपने परिवार के साथ वहां से निकली और भागी, और गई, परन्तु उसने पीछे मुड़कर देख लिया। कितनी शोक-पूर्ण बात है यह ! और हां, कितना आवश्यक है यह कि आज हम लूत की पत्नी को स्मरण रखे ! ताकि हम प्रभु की किसी भी आज्ञा को व्यर्थ समझकर टाल न दें।

तीसरे, हमें लूत की पत्नी को इसलिये भी स्मरण रखना चाहिए, कि जब वह अधर्म में से निकलकर जीवन के मार्ग की ओर बढ़ रही थी तो उसने पीछे छूटी बातों की ओर फिर से पलटकर देखने का प्रयत्न किया और वह नमक का खम्भा बन गई। प्रभु यीशु ने एक जगह कहा, "जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं" (लूका ९:६२)।

क्या आपने इस सच्चाई पर विश्वास कर लिया है, कि परमेश्वर ने आपके पापों के प्रायश्चित के बदले में अपने पुत्र यीशु को क्रूस के ऊपर

बलिदान किया है ? क्या आपने सब प्रकार के अधर्म से अपना मन फिरा कर, अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु की अज्ञानुसार बपतिस्मा ले लिया है ? यदि हां, तो आपने निश्चय ही हल के ऊपर अपना हाथ रख लिया है; आपने उस मार्ग के ऊपर चलने का निश्चय कर लिया है जो अनन्त जीवन को पहुंचाता है। परन्तु लूत की पत्नी को स्मरण रखिए, क्योंकि उस ने आगे बढ़ते हुए पीछे पलटकर देखने का प्रयत्न किया और वह नमक का खम्भा बन गई। प्रभु कहता है, कि यदि हम में से कोई उसके पीछे चलने का निश्चय करने के बाद, पीछे पलटकर देखता है तो वह परमेश्वर के राज्य के योग्य न होगा।

मित्रो, मेरा विश्वास है कि आज का यह संदेश आप सबके लिये बड़ा ही लाभकारी सिद्ध होगा। आईए, हम प्रभु के वचन के ऊपर विश्वास करें, और उसकी आज्ञाओं का पालन करें, और उसके द्वारा आशीष प्राप्त करने के लिये उसके मार्ग पर आगे की ओर दिन प्रति दिन बढ़ते जाएं।

१५

अब, आओ, चीटियों के पास चलें !

मैं सचमुच में अपने आप को बड़ा ही भाग्यशाली समझता हूं कि परमेश्वर इस प्रकार मुझे अपनी सेवा के लिये निरन्तर इस्तेमाल कर रहा है, और इसलिये भी कि आप इन प्रवचनों को सुनने के लिये बड़े ही उत्साह के साथ सदा तैयार रहते हैं। यूं तो ऐसी अनेकों वस्तुएं हैं जिनके उदाहरणों से हमें अच्छी शिक्षाएं और पाठ सीखने को मिलते हैं, परन्तु आज मैं आपका ध्यान उन नन्हीं-छोटी चींटियों की ओर दिलाना चाहता हूं, जो आप की और मेरी तरह बोल तो नहीं सकतीं, किन्तु तौ भी उनके विशेष गुणों से हमें बड़े ही ज्ञान की बातें सीखने को मिलती हैं।

इस बात का ध्यान मुझे उस समय आया जबकि आज सुबह घर से मैं अपने दफ़्तर को आने की तैयारी कर रहा था, कि एकाएक एक बच्चे ने मेरा ध्यान कमरे की एक दिवार के ऊपर दिलवाया, जिसके ऊपर चींटियां एक लाईन बनाकर चढ़ रही थीं। वे सब की सब एक लाईन बनाकर, एक कतार में, एक साथ चल रही थीं; और उनके निरन्तर आने-जाने से सफ़ेद दीवार के ऊपर करीब एक इंच चौड़ा रास्ता बन गया था, जो सीधा दीवार से छत तक जा रहा था, जहां एक मरा हुआ छोटा सा कीड़ा छत पर लगे जाले में फंसा मुझे नज़र आ रहा था। मैं इस बात को देखकर बड़ा ही हैरान हुआ, कि उस कीड़े को प्राप्त करने के उद्देश्य से ये चींटियां इतना अधिक परिश्रम करके इतनी ऊंचाई

तक चढ़ रहीं थीं। किन्तु अभी मैं इस बात पर विचार ही कर रहा था, कि अचानक मेरा ध्यान इस बात पर गया कि उन में से एक भी चींटी उस तंग वा अत्यन्त ही छोटे रास्ते के बाहर नहीं चल रही थी जो उनके लगातार आने-जाने पर दीवार पर पड़ी गर्द के छट जाने से दीवार पर बना नज़र आ रहा था। मैं कई मिनट तक मौन खड़ा होकर इस दृश्य को देखता रहा, और फिर एकाएक मेरा ध्यान बाइबल में लिखे नीतिवचन की पुस्तक के इस वर्णन पर गया, 'हे आलसी च्यूंटियों के पास जा; उनके काम पर ध्यान दे, और बुद्धिमान हो। उनके न तो कोई न्यायी होता है, न प्रधान, न प्रभुता करनेवाला। तौ भी वे अपना आहार घूपकाल में संचय करती हैं, और कटनी के समय अपनी भोजन वस्तु बटोरती हैं" (नीतिवचन ६:६-८)।

जिस विशेष बात के लिये यहां पवित्र शास्त्र का लेखक हमें चींटियों के पास जाने की सलाह दे रहा है, वह यह है, कि हम उन के पास जाकर उनके कामों पर ध्यान दें, और उन से बुद्धिमानी की बातें सीखें। सो आईए, देखें कि हम चींटियों से क्या सीखते हैं?

सबसे पहिली बात हम यह सीखते हैं कि यद्यपि उन्हें कोई समझाने वा बतानेवाला नहीं होता, कोई ऐसा नहीं जो उनकी अगुवाई करे या उन्हें शिक्षा दे, किन्तु तौ भी वे इतनी बुद्धिमान हैं कि वे कटनी के समय, घूपकाल में, बरसात आने से पहले अपना भोजन आहार इकट्ठा करती हैं। परन्तु दूसरी ओर, हम मनुष्यों के पास समझ वा बुद्धि है, और हमारी शिक्षा वा अगुवाई के लिये परमेश्वर ने हमें अपना वचन, अर्थात् बाइबल को हमें दिया है। वह हमें बताता है कि हमें इस जीवन में अपने आप को तैयार करना है, ताकि जब मृत्यु अचानक हमें शरीर से अलग कर दे और हम अपने परमेश्वर के सम्मुख पहुंचें तो हम एक पापी वा दुष्ट के समान नहीं परन्तु उसके अच्छे वा विश्वास योग्य दास ठहरें। लेकिन हम चींटियों की तरह तैयार रहने की आवश्यकता की ओर कोई ध्यान नहीं देते। हम दिन, और महिने, और साल गुज़ार देते हैं, किन्तु हम इस ओर कोई ध्यान नहीं देते, कि अभी जब कि दिन है, जबकि हमारे पास समय है, हम उठें और अपने आपको अपने परमेश्वर से मिलने के लिये

तैयारी करें। हम में से बहुतेरों ने कितनी ही बार प्रभु यीशु के सुसमाचार को सुना है। परन्तु हम में से कितनों ने उसके सुसमाचार की आज्ञाओं का पालन करके अपने आपको उस से मिलने के लिये तैयार किया है ? किन्तु तौ भी परमेश्वर का वचन कहता है, "उस समय जबकि प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उन से उलटा लेगा। वे प्रभु के सामने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दन्ड पाएंग।" (२ थिस्सलुनीकियों १:७—९)।

एक और जगह पवित्र शास्त्र का लेखक हमसे कहता है, "कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है। क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा" (सभोपदेशक १२:१३, १४)।

जबकि परमेश्वर का वचन हमें शिक्षा देता है कि हमें चाहिए हम प्रभु यीशु के सुसमाचार का पालन करें, और परमेश्वर का भय माने वा उसकी इच्छानुसार चलें, क्योंकि परमेश्वर अपने वचन अनुसार एक दिन हम सब का न्याय करेगा, तो क्या हमें इस ओर ध्यान देने की कोई आवश्यकता नहीं ? क्या हमें प्रभु के महान न्याय के दिन के आने से पहिले अपने आप को तैयार करने की कोई आवश्यकता नहीं ? ओह, हमें चींटियों के पास जाकर उन से सीखने की कितनी बड़ी आवश्यकता है। वे बारिश के आने से पहिले, धूपकाल में परिश्रम करके अपना आहार संचय करती हैं, और इस प्रकार वे हमें सिखाती हैं कि हम प्रभु के न्याय के दिन के आने से पहिले उसके सुसमाचार की आज्ञाओं को मानकर और उसके वचन के ऊपर चलकर अपने आपको तैयार करें।

जब मैं उन चींटियों के ऊपर विचार कर रहा था, जो दीवार पर बने उस छोटे से तंग रास्ते के ऊपर ही चलकर अपने निशाने तक पहुंचने का प्रयत्न कर रही थीं, तो मुझे प्रभु यीशु के वे शब्द स्मरण हो आए जहां उस ने कहा, "सकेत फाटक से प्रवेश करो; क्योंकि चौड़ा है वह

फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।"

मित्रो, आज हमें कितनी अधिक आवश्यकता है कि हम प्रभु के बताए हुए उस सकरे मार्ग के ऊपर चलने का प्रयत्न करें जो जीवन को पहुंचाता है। किन्तु, जैसा कि प्रभु ने कहा, अधिकांश लोग, इसके विपरीत, संसार के उस चाकल वा खुले मार्ग पर चल रहे हैं जिस पर चलना उन्हें बड़ा ही सरल प्रतीत होता है—परन्तु प्रभु ने कहा, कि उसका अन्त विनाश है (नीति० १४:१२)। सकरे मार्ग पर चलने का अर्थ इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कि हम प्रभु यीशु की शिक्षाओं के अनुसार चलें, क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता" (यूहन्ना १४:६)।

कितनी ही बार हम लोगों को कहते सुनते हैं कि मसीही जीवन व्यतीत करना बड़ा ही कठिन काम है। कुछ लोगों को तो यह बिलकुल असम्भव प्रतीत होता है। यदि हम चींटियों के ऊपर विचार करें, तो हम देखते हैं कि यद्यपि वे बिल्कुल निर्बल और शक्तिहीन् सी दीख पडती हैं, किन्तु अपने निश्चय वा आत्म विश्वास के बल पर वे बड़ी-बड़ी ऊंची दीवारों के ऊपर चढ़ जाती हैं। क्या आपने कभी नहीं देखा, कि कुछ ही छोटी-छोटी निर्बल सी चींटिया अपने से भी बहुत अधिक बड़ी वस्तु को खींचे लिये जा रही हैं? सो इसमें कोई संदेह नहीं, कि यदि हमारे भीतर चींटियों जैसा आत्मविश्वास वा निश्चय हो तो हम बड़े बड़े काम कर सकते हैं। प्रभु यीशु को सम्बोधित करके एक जगह प्रेरित पौलुस कहता है, "जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं" (फिलिप्पियों ४:१३)।

क्या आपके पास इस तरह का निश्चय वा आत्म-विश्वास है? क्या आप ने प्रभु के उस सकरे मार्ग पर चलने का निश्चय कर लिया है जो जीवन को पहुंचाता है? क्या आपने प्रभु यीशु के सुसमाचार की आज्ञाओं को मानकर अपने आप को तैयार कर लिया है? प्रभु चाहता

है कि आप उस में विश्वास लाएं कि वह आपके पापों का प्रायश्चित है; वह चाहता है, कि आप अपने पापों से मन फिराएं, और उसकी आज्ञा है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये जल के भीतर बपतिस्मा ले (मरकुस १६:१६; प्रेरितों २:३८)।

मेरी आशा है कि आप इन बातों के ऊपर विचार करके चींटियों की तरह बुद्धिमान बनेंगे।

परमेश्वर अपने मार्ग पर चलने के लिये आपको सामर्थ दे।

सूचना

शिक्षा और उपदेश के लिये अपने ही घर में रेडियो पर सुनिए कार्यक्रम "सत्य सुसमाचार"

यह कार्यक्रम रेडियो श्री लंका से २५ तथा ४१ मीटर बैंड पर इस प्रकार सुना जा सकता है:

मंगलवार:	रात ९:०० से ९:१५ तक
बृस्पतिवार:	रात ९:०० से ९:१५ तक
शुक्रवार:	रात ९:०० से ९:१५ तक
शनीवार:	रात ९:४५ से १०:०० तक

प्रचारक:
सनी डेविड